पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-६, मार्च, सन्-२०१६, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १६५, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

भारत पाक विभाजन

कलम की नोंक से बनी सीमायें हटाई भी जा सकती हैं!

जनता ने विभाजन के पक्ष में कभी मत नहीं दिया था

दशकों पूर्व प्रस्तुत प्रकाशवीर शास्त्री के विचार आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं

संसार में कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसे समुद्र और पहाड़ों के कारण भारत जैसा अखण्ड रूप प्राप्त हो। जाति, जलवायु और धरातल के रूपों में इतनी विभिन्नता होते हुए भी सुलेमान श्रेणी से लेकर आसाम की पहाड़ियों तक और हिमालय से लेकर समुद्र तक भारत एक ही भौगोलिक इकाई है। माननीय राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपनी 'खण्डित भारत' पुस्तक में पृष्ठ १०५ पर लिखा है-

'भारत एक विस्तृत देश है। उत्तर में हिमालय शृंखला से लेकर दक्षिण में कटिबन्ध रेखा तक फैला हुआ है। इसलिये जलवायु की विभिन्नता तथा शारीरिक गठन में अन्तर होना स्वाभाविक है। इसके साथ ही साथ प्रायः चार हजार मील लम्बा समुद्री किनारा है जो समुद्र से कटकर विषम हो गया है। इस देश में राजस्थान और सिन्ध के समान मरु प्रदेश भी हैं और बंगाल-आसाम जैसे हरे-भरे प्रान्त भी हैं। आसाम के उत्तर पूर्वी भाग तथा पश्चिमी घाट के दक्षिणी पश्चिमी भाग के समान प्रदेश भी हैं जहाँ अत्यधिक वर्षा होती है तथा राजपूताना सिन्ध और आन्ध्र के कुछ हिस्से के समान प्रदेश भी हैं जहाँ अति अल्प वर्षा होती है। इसी तरह ऐसे भी *प्रान्त हैं जहाँ अत्यधिक सर्दी तथा गर्मी* पड़ती है जैसे पंजाब व सीमाप्रान्त और ऐसे भी प्रदेश हैं जहाँ न तो सर्दी ही पड़ती हैं और न गर्मी जैसे दक्षिण में समुद्री किनारों के प्रदेश। लेकिन जलवायु तथा इन अनके विभिन्नताओं का प्रभाव यहाँ के निवासियों के धार्मिक विश्वासों पर नहीं पड़ा और न किसी प्रकार का भेदभाव ही पैदा हुआ है। जलवायु तथा इस तरह की अन्य विभिन्नताओं का प्रभाव विभिन्न प्रान्तों के निवासियों की पोशाक, गृह-निर्माण, रीति-रिवाज तथा रहन-सहन पर अवश्य पड़ा है। इस तरह के भेदभाव रहते हुए भी भारत अखण्ड है और प्रकृति ने इसे स्वाभाविक प्रतिबन्धों जैसे ऊँचे पहाड़ और समुद्र द्वारा अन्य देशों से अलग रखना ही उचित समझा है।'

हिन्दुओं के चार धाम दक्षिण में रामेश्वर उत्तर में बद्रीनारायण, पूर्व में जगन्नाथ पश्चिम में द्वारिका की चर्चा करते हुए इसी पुस्तक के १०६वें पृष्ठ पर माननीय लेखक ने लिखा है-'यह किसी भी प्रकार अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि चाहे देश पर किसी जाति का शासन क्यों न रहा हो, भारत कितने ही छोटे मोटे राज्यों में क्यों न विभक्त रहा हो, लेकिन यहाँ के हिन्दुओं ने कभी इसकी खण्डता की कल्पना तक नहीं की, और मुसलमान तथा ब्रिटिश शासकों ने भी उसी परम्परा को पूर्णतः स्वीकार किया है।'

भारत माता की अखण्डता के उपासक और हिन्दुत्व की बोलती हुई साकार प्रतिमा स्व.श्री चन्द्रगुप्त वेदालंकार भारत का गुणानुवाद करते हुए जब विभोर होकर अपने भाषणों में इसका वर्णन करते थे तो कहते थे-"हिमालय माँ का मस्तक है, गौरीशंकर मुकुट है, पंजाब और बंगाल दो सुदृढ़ बाहु हैं, गंगा और सिन्ध के मैदान दोनों पंजे हैं, यू.पी. मस्तिष्क और बिहार दिल है, आन्ध्र और महाराष्ट्र दो जंघायें हैं, तमिल और केरल दो टांगें हैं, रामेश्वर और कन्याकुमारी दो चरण हैं, लंका इस माता के चरणों में प्रणत भक्त है। हिन्द महा सागर की धारायें इसके चरण पखारती हैं, नर्मदा इसकी मेखला है, गंगा-यमुना सरस्वती की त्रिवेणी यज्ञोपवीत के तीन *धागे हैं, तक्षशिला और नवद्वीप तथा* काशी और कांची इसका अन्तःकरण चतुष्टय हैं, कश्मीर की केसर पंक्ति इसके मस्तक का कुंकुम है, हिमालय के हिमाच्छादित शिखरों पर सूर्य की किरणों से बनती हुई स्वर्णिम रेखायें भुवन मनमोहिनी हमारी माँ का सौभाग्य सिन्दूर हैं।"

ऊपर के दो उद्धरणों को देने का अभिप्राय यह है कि हिन्दू सदा से ही भारत को एक और अखण्ड रूप में देखकर ही आत्मसन्तोष प्राप्त करता है। मुसलमान और ईसाई आदि की अपेक्षा हिन्दू का स्वाभाविक अनुराग भारत की अखण्डता से यों और भी है, क्योंकि उसकी प्रेरणा के स्रोत उसके पूर्वजों की इसी धूलि में निहित है। आदर्श पुरुष बनने के लिये उसे ईसा के ११ शिष्यों अथवा उमर उस्मान को नहीं झांकना पड़ता, यहीं पर राम और कृष्ण के सन्देश उसे बोलते हुए मिलते है, सुकरात और अरस्तू के सिद्धान्तों से ऊंचे कपिल और कणाद के दर्शन शास्त्र उसके पास हैं, सिम्पसन डेलायला और लैला मंजनू की जगह सत्यवान सावित्री और नल दमयन्ती के उदाहरण उसे यहीं मिलते हैं, थार्मापोली और काबा कर्बला के मैदानों से बढ़कर हल्दीघाटी और कुरुक्षेत्र की रणभूमि इसी भारत में है। भारत को खण्डित करने में मुस्लिम नेताओं को विदेशी दृष्टिकोण से भी बहुत कुछ उद्बोधन मिला जो आज भी ज्यों का त्यों है। पाकिस्तान आन्दोलन के जन्मदाताओं में चौधरी रहमत अली ने तो अखिल भारतीय मुस्लिम लीग शब्द में आये भारतीय शब्द से भी मतभिन्नता व्यक्त की और कहा भारतीयता के विरुद्ध हमारी युद्ध घोषणा का यह तो खोखलापन सिद्ध कर देगा। जिन अलीबन्धुओं के कारण भारतीय राजनीति के प्रमुख कर्णधार महात्मा गांधी को हिन्दुओं के कोप का भाजन बनना पड़ा, उन्हीं में से एक का देहान्त अकस्मात् लन्दन में हुआ। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपनी अभिलाषा यह व्यक्त की- 'मरने के बाद मुझे मदीना के निकट दफनाया जाय।' उसी लन्दन नगर में एक और मृत्यु हुई स्व.लौहपुरुष वल्लभभाई पटेल के भाई श्री विट्ठल *भाई पटेल की उन्होंने मरने से पूर्व* अपनी अन्तिम इच्छा व्यक्त की- 'यदि किसी प्रकार मेरा शव भारत ले जाने की व्यवस्था न हो सके तो जलाकर मेरी राख गंगा में प्रवाहित की जाय।' यह है मनोवृत्तियों का अन्तर जिसके कारण देश में यह विदेशी दृष्टिकोण बढ़ा और पाकिस्तान की सृष्टि हुई।

कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन में विभाजन जिस समय माना जा रहा था और परिस्थितियों (जो कि अधिकांश स्वनिर्मित ही थीं) को कारण बताया जा रहा था, उस समय देश को यह भी आश्वासन दिया गया था- पाकिस्तान पानी की लकीर है, रेत की दीवार है, आर्थिक दृष्टि से दुर्बल राष्ट्र रहेगा, कोयला आदि के लिए हमारा आश्रित रहेगा, आदि आदि बहुत से ऐसे कारण बताये गये थे जिनसे चन्द दिन में ही उसका पतन निश्चित है। पता नहीं वह कारण बताने वाले कोठियों की गर्मी में कभी उनका ध्यान भी करते हैं या नहीं? गांधी जी ने जो पाकिस्तान बनने के बाद प्रायश्चित के आंसू गिरा कर कई बार कहा था- मैं उस दिन तक चैन से न बैठूंगा जिस दिन तक पाकिस्तान से आये अपने घरों में न चले जांय और यहां से गये फिर यहां वापिस न आ जांय। पता नहीं गांधी की जय लगाने वाले उनकी इस अन्तिम अभिलाषा पर भी कभी सोचते हैं या नहीं?

हम जिस समय भारत की अखण्डता की चर्चा करते हैं तब उसे स्वयं पानी की लकीर और रेत की दीवारें बताने वाले पत्थर की लकीर और सीमेंट की दीवार मानकर उसके एक होने में सन्देह प्रगट करते हैं तथा एक करने वालों की

आवाज को साम्प्रदायिक आदि फतवे दे डालते हैं। यह दृढ़ विश्वास के साथ लिखा जा सकता है जिन आधारों पर पाकिस्तान और भारत दो पृथक्-पृथक् राष्ट्र कर दिये गये हैं वह यदि ऐसे ही रहते हैं तो शताब्दियों और सहस्राब्दियों तक ही नहीं युगों तक भी दोनों देशों के वासियों को चैन से नहीं बैठने दे सकते। अखण्ड भारत का नारा लगाकर जहां आर्थिक और सांस्कृतिक भेद की दीवार

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

ब्रह्म है यह !

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।।

(यजुर्वेद : 40/4)

ब्रह्म है यह!

चिर अकंपित,
व्याप्ति लेकिन
सकल संसृति में अलौकिक!

इन्द्रियों की पहुँच से है दूर,
मन से गम्य है परे।

वेग मन से भी अधिक है।
जहाँ जाता मन
वहाँ पाता इसे है!

वस्तुतः यह पूर्व में ही
हर कहीं पहुँचा हुआ है,
व्याप्ति है सर्वत्र इसकी।

स्वयं निश्चल
पर चपल संसार का
आधार है यह।

ब्रह्म है यह!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

दयानन्द-दिग्विजय के दो अध्याय

आर्य समाज के प्रारंभिक दौर में अखिलानन्द कविरत्न का संस्कृत-काव्य 'दयानन्द-दिग्विजय' प्रकाशित हुआ था। सामान्य क्रम में ऐसा प्रतीत होता था कि कवि ने अतिशयोक्ति का सहारा लिया होगा- किन्तु ज्यों ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों त्यों इस बात की पुष्टि होती जा रही है कि उक्त ग्रंथ में अतिशयोक्ति नहीं है, वरन् यथार्थपरक वर्णन किये गये हैं। १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर आज २१वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक जो घटनाएँ घटित हो रही हैं, उनसे 'दयानन्द-दिग्विजय' की सत्यता निरन्तर प्रमाणित होती जा रही है। यदि कोई आँखें बन्द कर ही ले तो उसका उपचार ही क्या है?

पहली घटना शनिवार, २३ फरवरी २०१६ को घटित हुई जब महाकुम्भ प्रयाग से वापसी में एक आकस्मिक दुर्घटना में दिवंगत जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी हंसदेवाचार्य महाराज के पार्थिव शरीर को पौराणिक सनातन परम्परानुसार जल समाधि या भूसमाधि न देकर उनकी अंतिम इच्छानुसार हरिद्वार के खड़खड़ी श्मशान घाट पर राजकीय सम्मान के साथ दाह संस्कार अर्थात् चिता सजाकर वेदोक्त विधि से मंत्रोच्चार पूर्वक जलाया गया और उनके दो प्रमुख शिष्यों स्वामी अरुणदास और स्वामी लोकेशदास ने मुखाग्नि दी।

हरिद्वार में गंगाजी की पावन जलधारा के प्रवहमान होते हुए भी इतने बड़े धर्माचार्य के पार्थिव शरीर को पौराणिक सनातन मान्यता के अनुसार जल समाधि या भूसमाधि न देकर 'भस्मान्तं शरीरं' की वेदाज्ञा के अनुरूप यह दाहकर्म- अन्त्येष्टि संस्कार सभी को विस्मय में डालने वाला था। प्रश्न यह है कि साधुसंतों के लिए प्रचलित भूसमाधि या जलसमाधि के स्थान पर दाह संस्कार की प्रेरणा कहाँ से मिली?

इस बुद्धिसंगत और तर्कसंगत प्रेरणा के सूत्रधार महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज हैं; जिन्होंने अपने शरीर को जल समाधि न देकर सामान्य जनों की तरह भस्मसात् करने का आदेश दिया था। महर्षि के इस इच्छादेश का पालन पूरी तरह किया गया। "यद्यपि स्वामी जी के परलोक गमन का समाचार सुनकर दो संन्यासी आये, जो यह चाहते थे कि स्वामी जी का शरीर उन्हें सौंप दिया जाय। संन्यासियों में प्रचलित परम्परानुसार वे उसे भूमिस्थ कर देना चाहते थे किन्तु आर्य पुरुषों ने उन्हें समझाया कि महाराज तो अपने जीवन काल में ही स्वनिर्मित स्वीकार पत्र में स्वयं की अन्त्येष्टि के संबन्ध में विस्तृत निर्देश कर गये हैं अतः उनकी अन्त्येष्टि तो वेदोक्त विधि से ही की जायगी। इस पर वे संन्यासी चले गये। अगले दिन ३१.१०.१८८३, बुधवार कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०४०वि. को स्वामी दयानन्द का दाह संस्कार मलूसर श्मशान भूमि में संस्कारविधि में उल्लिखित विधि से उनके मुख्य शिष्य स्वामी आत्मानन्द एवं ब्रह्मचारी रामानंद ने चिता में अग्नि प्रवेश कराया और श्रीमहाराज के पार्थिव शरीर को भगवान् हुताशन को समर्पित कर दिया।" (नवजागरण के पुरोधा : स्वामी दयानन्द सरस्वती, पृष्ठ ५४५)

धार्मिक जगत के इतिहास में कदाचित् यह पहला अवसर था, जब एक संन्यासी का दाह संस्कार किया गया और रूढ़ियों की जंजीरें चटक कर टूट गईं थीं। २३ फरवरी २०१६ को पुनः एक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी हंसदेवाचार्य महाराज ने रूढ़ियों का परित्याग करते हुए अपने शरीर को वेदोक्त विधि से भस्मसात् करने का संकल्प पूर्ण किया। दोनों प्रणम्य हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि यदि हंसदेवाचार्य जगद्गुरु हैं तो दयानन्द सरस्वती जगद्गुरुओं के भी गुरु हैं। दयानन्द-दिग्विजय का यह प्रथम अध्याय है। बताते चलें हंसदेवाचार्य से पूर्व रामजन्मभूमि न्यास अयोध्या के प्रमुख संत श्रद्धेय स्व.परमहंस रामचन्द्र दास ने भी जलसमाधि या भूसमाधि के स्थान पर 'भस्मान्तं शरीरम्' के मार्ग का ही चयन किया था। आशा करते हैं कि अन्य साधु-संत, महात्मा, जगद्गुरु भी उसी का अनुसरण करेंगे और सरिताओं अथवा धरती को प्रदूषण से बचाकर वैदिक मान्यताओं, धर्म और मार्ग की रक्षा करेंगे।

दूसरी घटना २४ फरवरी २०१६ की है, जब भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी ने रविवार को दिव्य भव्य कुंभ को नई ऊँचाई दे दी। त्रिवेणी में पुण्य की पाँच डुबकी लगाने के बाद कुंभ के दौरान स्वच्छता में दिनरात मेहनत करने वाले पाँच सफाई कर्मियों के पांव पखारे और उनके चरणों को कपड़े से पोंछा। याद करें कभी इसी सुरसरि के तट पर त्रेतायुग में वनमार्ग के पथिक श्रीरामचन्द्र जी के केवट ने पाँव पखारे थे- उसका उद्देश्य था अपनी जीवन नौका की सुरक्षा किन्तु आधुनिक युग में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी ने स्वच्छता कर्मियों के पाँव पखारे- उनका उद्देश्य है- भारत राष्ट्र रूपी नौका की सुरक्षा। समाज के अन्तिम पादान पर खड़े व्यक्ति को प्रधान मंत्री द्वारा इस तरह सम्मान मिलेगा तो भला ऊँच-नीच छूआछूत, अमीर गरीब का भेदभाव देश में कैसे रह पायेगा। वास्तव में श्री आदित्य नाथ योगी जी ने अतीव श्रद्धा और विश्वास से जिस भव्य-दिव्य महाकुंभ का आयोजन किया और जहां लगभग डेढ़ महीने तक सहस्रों साधुसंतों, लाखों कल्पवासियों और करोड़ों देशवासियों ने संगम में डुबकी लगाकर पुण्यलाभ प्राप्त किया किन्तु उसी कुंभ के अंतिम क्षणों में प्रधान मंत्री श्री मोदी ने स्वच्छता कर्मियों के पांव पखार कर महाकुंभ को वास्तविक गौरव प्रदान किया- और चरितार्थ किया महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की इस मान्यता को-"तीर्थ- जिससे दुःख सागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, यमादि योगाभ्यास पुरुषार्थ विद्यादानादि शुभकर्म हैं, उसी को तीर्थ समझता हूँ, इतर जल स्थलादि को नहीं।" (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः,२५)

यह है दयानन्द दिग्विजय का द्वितीय अध्याय।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

हां! इनके सम्बन्ध से जीव पाप पुण्यों का कर्त्ता और सुख दुःखों का भोक्ता है।

जब इन्द्रियां अर्थों में मन इन्द्रियों और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न होती है। वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्त्तता है वही मुक्तिजन्य सुखों को प्राप्त होता है। और जो विपरीत वर्त्तता है वह बन्धजन्य दुःख भोगता है।

दूसरा साधन 'वैराग्य' अर्थात् जो विवेक से सत्यासत्य को जाना हो उसमें से सत्याचरण ग्रहण और असत्याचरण का त्याग करना विवेक है- जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव से जानकर उसकी आज्ञा पालन और उपासना में तत्पर होना, उससे विरुद्ध न चलना, सृष्टि से उपकार लेना विवेक कहाता है।

तत्पश्चात् तीसरा साधन- 'षट्क

मुक्ति के साधन

सम्पत्ति अर्थात् छः प्रकार के कर्म करना- एक 'शम' जिससे अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना। दूसरा

'दम' जिससे श्रोत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कर्मों से हटाकर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा 'उपरति' जिससे दुष्ट कर्म करने वाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा 'तितिक्षा' चाहे निन्दा, स्तुति, हानि, लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु हर्ष शोक को छोड़ मुक्ति साधनों में सदा लगे रहना। पांचवां 'श्रद्धा' जो वेदादि सत्य शास्त्र और इनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान् सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठा 'समाधान' चित्त की एकाग्रता ये छः मिलकर एक 'साधन' तीसरा कहाता है।

चौथा 'मुमुक्षुत्व' अर्थात् जैसे क्षुधा तृषातुर को सिवाय अन्न जल के दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे बिना मुक्ति के साधन और मुक्ति के दूसरे में प्रीति न होना।

ये चार साधन और चार अनुबन्ध अर्थात् साधनों के पश्चात् ये कर्म करने होते हैं। इनमें से जो इन चार साधनों से युक्त पुरुष होता है वही मोक्ष का अधिकारी होता है। दूसरा 'सम्बन्ध' ब्रह्म की प्राप्ति रूप मुक्ति प्रतिपाद्य और वेदादि शास्त्र प्रतिपादक को यथावत् समझ कर अन्वित करना।

तीसरा 'विषयी' सब शास्त्रों का प्रतिपादन विषय ब्रह्म उसकी प्राप्तिरूप विषय वाले पुरुष का नाम विषयी है। चौथा 'प्रयोजन' सब दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द को प्राप्त होकर मुक्ति सुख का होना। ये चार अनुबन्ध कहाते हैं। *(-क्रमशः)*

वेदांजलि

सद्विचारों के प्रचारक बनो

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।

-यजुर्वेद 30/1

शब्दार्थ-

हे **(देव)** दिव्यगुणयुक्त प्रभो! **(सवितः)** समस्त ऐश्वर्य से युक्त और जगत् को उत्पन्न करनेवाले जगदीश्वर! **(दिव्यः)** विशेष गुणयुक्त **(गन्धर्वः)** वाणी और पृथिवी को धारण करनेवाले **(केतपूः)** ज्ञान से अपने को पवित्र करनेवाले **(नः)** हमारी **(केतम्)** बुद्धि को **(पुनातु)** पवित्र कीजिये। **(वाचस्पतिः)** वाणी को **(स्वदतु)** माधुर्य से युक्त करे। **(यज्ञपतिम्)** शुभकर्मों के रक्षक को **(भगाय)** ऐश्वर्ययुक्त धन के लिए **(प्रसुव)** उत्पन्न कीजिये **(यज्ञम्)** शुभकर्म की **(प्रसुव)** प्रेरणा कीजिये।

व्याख्या-

इस मंत्र में भगवान् से चार प्रार्थनाएँ की गई हैं।

पहली-**'यज्ञं प्रसुव'**-'प्रत्येक मनुष्य के हृदय में शुभकर्म करने की प्रेरणा कर।' दूसरी-**'यज्ञपतिं प्रसुव'**-'जो शुभ कर्म करनेवाले हैं, उनके उत्साह को बढ़ाओ!' तीसरी-**'दिव्यः गन्धर्वः'**-'दिव्य वाणी को धारण करनेवाले' और **'केतपूः'**-'जिन्होंने ज्ञान से अपने आपको पवित्र किया है' **'नः केतं पुनातु'**-'हम भूले-भटकों को मार्ग बतावें।' चौथी-**'वाचस्पतिः नः वाचं स्वदतु'**-'वाणी के स्वामी हमारी वाणी को माधुर्य से युक्त बनावें।'

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जहाँ धार्मिक क्षेत्र की अनेक बुराइयों का सुधार किया, वहाँ स्तुति, प्रार्थना और उपासना के नाम पर जो धाँधली चल रही थी, उसका भी वास्तविक स्वरूप हमारे समक्ष रक्खा। मध्यकाल में प्रार्थना करने वाला भक्त अपने दुःख को दूर करने की, सम्पत्ति और ऐश्वर्य माँगने की, अपने शत्रु के विनाश आदि की एक लम्बी फेहरिस्त भगवान् के सामने पेश करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता था। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रार्थना का विश्लेषण करते हुए समझाया कि प्रार्थना प्राणिमात्र और मनुष्यमात्र की सुख समृद्धि के लिए करनी चाहिए; दूसरे के विनाश की अथवा पीड़ा देने की नहीं। प्रार्थी को भगवान से प्रार्थना के साथ-साथ अपने प्रार्थित अभिप्राय की पूर्ति के लिए अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार स्वयं पुरुषार्थ करना चाहिए, तभी भगवान् भी सहायता करते हैं।

ऋषि द्वारा प्रदत्त इस प्रकाश में, मंत्र में वर्णित इन चार प्रार्थनाओं का भाव यह निकला कि संसार को सुखधाम बनाने के लिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति के चार कर्तव्य हैं।

पहला यह कि प्रत्येक व्यक्ति को सद्विचारों का प्रचार करना चाहिए। दूसरा यह कि अच्छे काम करने वाले धर्मात्माओं के काम की प्रशंसा करके उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए। तीसरा यह कि जो-जो हम जानते जावें उस पर पूरी आस्था और दृढ़ता के साथ आचरण आरम्भ कर देना चाहिए। चौथा यह कि मनीषी अनुभवियों से मधुर भाषण की शिक्षा लेकर हमें इस प्रकार की वाणी बोलनी चाहिए, जिसे सुनकर व्याकुल और विक्षुब्ध व्यक्ति भी शान्ति लाभ करें।

सत्-ज्ञान का प्रचार उसी प्रकार का पुनीत कर्म है, जैसे नेत्रहीन व्यक्ति को खाई-खन्दक से बचाकर ठीक मार्ग पर चलाना। कोई साधारण व्यक्ति भी ऐसा नहीं मिलेगा जो अपनी आँखों के आगे किसी अन्धे को खाई-खन्दक अथवा कुँए में गिरने दे। आवश्यक से आवश्यक काम छोड़कर सामान्य व्यक्ति भी दृष्टिहीन व्यक्ति को संभालता है और ऐसा करने पर सन्तोष का अनुभव करता है कि मैंने एक अच्छा काम किया है। इस प्रवृत्ति के धर्म-भीरुओं से पूछना चाहिए कि एक व्यक्ति चक्षुओं के अभाव में खन्दक में गिरनेवाला है, जहाँ उसकी मृत्यु हो सकती है। आप उसे बचाना तो अपना पवित्र धर्म मानते हैं, किन्तु एक व्यक्ति ज्ञानरूपी आँख के अभाव में पाप के कुँए में गिरने जा रहा है और आप जानते हुए भी उसे नहीं समझाते तो आपसे यह उसी प्रकार का भयंकर पाप हो गया जैसे आपके देखते अन्धा कुँए में गिर कर मर जाय। उस दुनियावी कुँए में गिरने से तो एक जीवन ही नष्ट होता, किन्तु पाप-कूप में गिरकर तो उसके अनेक जन्म बिगड़ सकते हैं। अतः ज्ञान का प्रचार मनुष्य का एक पवित्र कर्त्तव्य है।

मंत्र की दूसरी बात है शुभकर्म करने वालों के सद्गुणों की सराहना करके उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए। इससे वे और उमंग से काम करेंगे तथा अन्य सामान्य व्यक्ति भी उनके यश और गौरव को देखकर शुभकर्म करने की प्रेरणा लेंगे। इसके विपरीत, यदि उनकी प्रशंसा न करके डाह और जलन से उन पर मिथ्या दोषारोपण करके उनकी टाँग खींचेंगे तो इससे समाज की बहुत बड़ी हानि यह होगी कि लोग भलाई करने से कतरायेंगे और परिणामस्वरूप अच्छाई के प्रचार का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा।

मंत्र की तीसरी बात यह है कि ज्ञान को अपने आचरण का अंग बनाकर ही दूसरों को उपदेश देना चाहिए, तभी कथन का प्रभाव होता है। यदि स्थिति इसके विपरीत हो तो उसका फल सन्तोष प्रद नहीं होगा।

मंत्र की चौथी और अंतिम बात है- हम वाणी को वश में रखके उसका इस प्रकार प्रयोग करें कि सब ओर आनन्द और माधुर्य की वृद्धि हो।

(श्रुति सौरभ से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११७

विचारं नव्यं नः सुविमलसदाचारमपि च
दृढत्वं संकल्पे रिपुजनविरोधे धृतिमपि।
मुहुः सिंचन् बलमबलगात्रे निजजने
शवीभूते योगिन् कथमिव तु वैतालिक इव।।

तुमने नये विचार सींचे हममें
और नयी रीति-नीति एवं
कार्यशैली दी !
संकल्पों में दृढ़ता दी और
शत्रुओं का विरोध करने में
धैर्य प्रदान किया !!
अपने निर्बल शरीर के लोगों में
बार बार तुम बल सींच कर
मुर्दों को खड़ा कर देते हो?
यह सब तुम कैसे कर लेते हो?
हे योगी!
तुम कोई जादूगर तो
नहीं हो?

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष....)

कलम की नोंक....

हटाने को कहा जा रहा है वहां आगामी पीढ़ियों के लिए सुखपूर्वक रह सकने को भी एक वातावरण तैयार किया जा रहा है। चन्द नेता और शासकीय कुर्सियां भले ही इसे इस समय पसन्द न करें परन्तु साधारण जनता का हित इसी में निहित है। जिन दो दलों मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने विभाजन माना था, अच्छा तो यह ही होता उनकी ही ओर से आज भारतीय अखण्डता का भी आन्दोलन चलता परन्तु यदि वह नया नया राज्य लेकर अभी उतना नहीं सोच पा रहे तो कम से कम जनता को तो अपनी जागरूकता पर प्रोत्साहन देते रहें।

सचमुच भारत आज अशान्त विश्व में शान्ति की बंसरी लेकर शान से बजाता और उसकी आवाज में बल होता, परन्तु कब? जब स्वयं उसके घर में शान्ति होती और आत्मनिर्भर होता। चावल, गेहूँ आदि की भीख उसे दूसरों से न मांगनी पड़ती। भारत के टुकड़े हो जाने *से गेहूँ, चावल, जूट, कपास और कोयला* आदि कितने पदार्थ ऐसे हैं जिनके कारण आर्थिक समस्यायें विशृंखलित हुई पड़ी हैं। तक्षशिला का विश्वविद्यालय जहाँ महामुनि पाणिनी ने बैठकर अष्टाध्यायी जैसे संस्कृत व्याकरण के मूल ग्रन्थ की रचना की थी, लव का बसाया लाहौर, कुश का बसाया कसूर, तिब्बत से उतरकर आये आर्य समतल भूमि के जिस स्थान पर पहले-पहले बसे थे वह मुल्तान (मूलस्थान), सिन्धु नदी की वह घाटियां जिसके किनारे ऋषियों ने बैठकर कभी ऋग्वेद की ऋचाओं का गान किया था और जिस सिन्धु की सभ्यता आर्यों की पुरानी सभ्यता कहलाती है, सिखों के ननकाना साहब और पंजा साहब आदि ऐसे कितने सांस्कृतिक स्थान हैं जो आज पाकिस्तान में हैं। इसी प्रकार जामा मस्जिद, निजामुद्दीन, ताजमहल और भी कितने स्थान मुसलमानों के हैं जो भारत में हैं। इन सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याओं के बीच में लगी भेद की दीवार हटा देने पर दोनों ही राष्ट्रों का हित है। भारत और पाकिस्तान की सीमायें ऐसी तो हैं नहीं जो प्राकृतिक हों और न मिटाई जा सकें, वह तो कलम की नोंक से बनी हैं और उसी से हटाई भी जा सकती हैं। रेडक्लिफ जो भारत के मानचित्र में खण्डित करने की रेखायें खींचकर गया है उनकी रक्षा को दोनों देश की सरकारें सीमाओं पर सेना नियुक्त कर जो अरबों रुपया पानी की भांति बहा रही हैं उसे यदि इन गत पांच वर्षों का सारा धनसंग्रह कर भारतीय उद्योगों, शिक्षा एवं सिंचाई आदि के साधनों में व्यय किया जाता तो आज के सूर्य और चन्द्रमा प्रसन्नता की किरणें देश में छिटकाया करते।

भारत और पाकिस्तान के एक होने की जब भी कोई बात चलाता है तब स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उठ खड़ा होता है; अब तो उसके दो ही प्रकार हैं युद्ध अथवा दोनों देशों की जनता की बलवती मांग। इससे कौन-से मार्ग का आश्रय लेना हितकर होगा। जहाँ तक युद्ध का सम्बन्ध है भारतीय नेता दोनों देशों की भूमि पर अब रक्त की नदी बहती नहीं देखना चाहते और वह कहते *हैं पाकिस्तान पर हमला करने का हमारा* कोई विचार नहीं है, जबकि इसके विपरीत जफरुल्ला-निजामुद्दीन और गुलाम मुहम्मद के भाषण सदैव इस प्रयास में हैं कैसे ही छिड़े। उधर उनके पत्र लगातार युद्ध की धमकी दे रहे हैं। अभी कश्मीर के प्रश्न पर डान ने यह ही विष उगला है। पीछे वहीं के एक उर्दू पत्र में यह पंक्तियाँ छपी थीं-

जंग है क्या चीज तुझको क्या पता ऐ भारती!
जाके मन्दिर में भजन गा फूल के हारों से खेल।
बर्क है, शोला है, बच्चा-बच्चा पाकिस्तान का
फूंक देंगे सारे भारत को न अंगारों से खेल।

इन गर्वोक्तियों का उत्तर भारत के पत्र और नेता इन्हीं हल्की रीतियों से तो नहीं देना चाहते। परन्तु अभी भी मेरठ कांग्रेस में की कई पटेल की यह गर्जना देश में गूंज रही है तलवार का जवाब तलवार से भी दिया जा सकता है। रिजवी ने जब शेर बनकर भारत पर टूटने और आसफजाही झण्डा लालकिले पर लहराने की बात कही थी तब लौह पुरुष ने यह ही धीमी-सी भाषा में कहा था अधिक न उछलिये अन्यथा शेरों के रहने की दो ही जगह होती है सरकस के कटहरे या फिर जंगल की झाड़ियां, कहीं न कहीं भेजना पड़ेगा। सिकन्दराबाद जेल की दीवारें बतायेंगी आज वह शेर कहां बन्द है। लौहपुरुष स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल का भारत युगों तक ऋणी रहेगा। अंग्रेज जाने के बाद जहां विभाजन करके पाकिस्तान हमारी छाती पर बिठा गया था, वहाँ छै सौ से अधिक रियासतों को स्वभाग्य निर्णय का अधिकार देकर और भी एक विपत्ति खड़ी कर गया था। सरदार पटेल की बुद्धिमत्ता से आज वह सब भारत के अंग हैं और वहां भारतीय ध्वज लहरा रहे हैं। इसके लिये वहां के शासक और वह वीर जातियां भी बधाई की पात्र हैं। महाभारत के समय छोटी-छोटी इकाइयों में बंटे भारत को एक कर जो कार्य पांच सहस्र वर्ष पूर्व योगीराज कृष्ण ने किया था वह अब लौहपुरुष पटेल ने किया है। हमारे नेताओं ने जहां यह कहा है हम पाकिस्तान पर हमला नहीं करना चाहते वहां साथ यह भी कह दिया है पर यदि उसने हमें छेड़ा तो हम चुप भी नहीं बैठे रहेंगे। जहां तक युद्ध का प्रश्न है हम उसे जानते न हों ऐसी बात नहीं है, जिस जाति के बच्चों को पैदा होते ही जातकर्म संस्कार में 'अश्माभव' 'परशुर्भव' पत्थर और फरसा बनकर शत्रु के सिर कुचलने की सीख दी जाती है उसे युद्ध प्रियता तो पूर्वजों की वसीयत के रूप में माता के दूध में और घुंटियों में पिलाई जाती है। शिवाजी, महाराणा प्रताप, साँगा, छत्रसाल, लक्ष्मीबाई और रणजीत सिंह, गुरु गोविन्द सिंह तथा बन्दा की सन्तानें अभी इतनी निस्तेज नहीं हो गई हैं जो इन बन्दर घुड़कियों में आ जायें। और फिर जिन घाटियों में यह आवाजें लग रही हैं कभी उन्होंने वहां की पठानियों के मुख से हरीसिंह नलवा की वह भी चर्चा सुनी है या नहीं जिसे अपने बच्चों को चुप करते समय गुन गुनाकर कहती है-

मुगल दलों ने जब हिन्द पर चढ़ाई की,
छीन लिया हिन्द का जलाल और जलवा
कितने ही कायरों ने अपनी बचाई जान
मुगल बादशाहन के चाट-चाट तलवा।
जबकि एक क्षत्रिय है निकला मैदान बीच
मार-मार मुगलों को बनाय दिया हलवा,
रोते हैं बच्चे जब आज लों पठानियों के
तो कहकर चुपाती आया हरीसिंह नलवा।

यदि भारत को कभी युद्ध के लिये विवश किया गया तो यहां की अहीर-जाट गुजर-राजपूत-भूमिहार आदि जातियां, गोरखे-सिख और मराठे सरदार हर बड़ी से बड़ी विपत्ति में पड़कर भारत का झण्डा ऊंचा रखने का साहस और विश्वास रखते हैं। सरकार की आन्तरिक और वैदेशिक नीति से चाहे कितना ही मतभेद राजनैतिक पार्टियों को हो परन्तु यदि कभी वह राष्ट्र को रण के लिए आह्वान करती है तो इस प्रश्न पर सारा राष्ट्र एक होकर अपने अदम्य उत्साह का परिचय देगा।

जहाँ तक दोनों देशों की जनता द्वारा एकीकरण का प्रश्न उठाये जाने की मांग है सो जनता ने तो पृथक्करण (विभाजन) को भी कभी मत नहीं दिये वह तो कुछ नेताओं के आन्दोलन थे। साधारण जनता तो दोनों देशों की आज भी खिन्न है जिनके शताब्दियों से चले आ रहे सम्बन्ध नाते और जीवन निर्वाह के साधन विशृंखलित हो गये।

('सन् 1952 मे प्रकाशित महान् वक्ता और लेखक स्व.प्रकाशवीर शास्त्री की पुस्तक 'मेरे सपनो का भारत' से सम्पादित अंश, साभार)

व्यक्ति-विशेष

आर्यसमाज लखनऊ का नया क्षितिज

पं. बालगोविन्द पालीवाल

(3/437, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ)

"यहु तौ घर है पीय का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै भुँइ धरै, तब पैठे यहि मांहि।।"

कबीर की एक हजार वर्ष पूर्व कही गई उपर्युक्त पंक्तियाँ 'आर्य लोक वार्ता' पर अक्षरशः घटित होती हैं। 'आर्य लोक वार्ता' का मार्ग भी त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग है। यह वेद-पथ हे और वेद पथ पर चलना सरल नहीं होता है। सामान्य आर्यजन संध्या, हवन, यज्ञ तथा सत्संग तक सीमित रहना चाहते हैं और वे इस तथ्य को भूल चुके हैं कि वेद-प्रचार के लिए लेखनी भी जरूरी है। अनेकों विद्वान् आज लेखनी के माध्यम से आर्यसमाज रूपी वृक्ष को हराभरा, पुष्पित-पल्लवित करने हेतु संलग्न हैं। 'आर्य लोक वार्ता' ऐसे व्यक्तियों की खोज में रहता है- जो इस मार्ग के व्रती हैं अथवा व्रती होने की जिनमें संभावनाएँ हैं। ऐसी ही खोज में एक दिन मेरी भेंट पं.बालगोविन्द पालीवाल से हो गई।

स्मृतिशेष माता-पिता भागवती देवी और नन्दलाल पालीवाल के सुपुत्र बालगोविन्द का जन्म २ अप्रैल, १९५३ को ग्राम-मीराकांकर, जिला हमीरपुर (उ.प्र.) में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.एस-सी., बी.एड. करने के बाद आप सिंडीकेट बैंक की सेवा में चयनित हुए, जहाँ सफलतापूर्वक कार्यकाल पूरा करके क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ से सेवानिवृत्त हुए। श्री पालीवाल बताते हैं कि माँ के स्वाभिमानी और कर्मठ व्यक्तित्व की छाप उनके जीवन पर विशेष रूप से पड़ी जिसका प्रभाव उनके विविध क्रियाकलापों में देखने को मिलता है।

सेवाकार्य और जरूरतमंदों की मदद करना पालीवाल जी का सहज स्वभाव है। राह चलते अगर कहीं कोई पीड़ित-विपन्न या अभावग्रस्त मिल जाता है, तो वह उनकी स्नेह दृष्टि से वंचित नहीं रहता है। अपने आवास के सामने पार्क में प्रतिदिन योग प्रशिक्षण प्रातःकाल ५ बजे देते हैं तथा पार्क की समुचित देखभाल, स्वच्छता का स्वयं ध्यान रखते हैं, तथा दूसरों को प्रेरित करते हैं। पतंजलि योगपीठ के प्रशिक्षक पालीवाल ने योग को अपने जीवन में उतार लिया है। सेवाकार्यों में आपकी पत्नी प्रवीना पालीवाल का पूरा सहयोग मिलता है। 'उम्मीद शिक्षा संस्थान' में आप प्रतिदिन एक घण्टा- वंचित बालकों को विद्यादान करते हैं और अपने जीवन को पूरी तरह से नियमित और अनुशासित और संयमित बनाये रखते हैं। कोई पालीवाल जी से मिलकर उनके मधुर वार्तालाप और वाणी की सरलता और मधुरता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

आर्य समाज गोमती नगर के पालीवाल जी पूर्व प्रधान तथा वर्तमान में मंत्री हैं। आर्य समाज गोमती नगर जिसके साप्ताहिक अधिवेशन- विनय खण्ड के एक पार्क में प्रति रविवार को प्रातःकाल होते रहते हैं। यों तो आर्य समाज गोमती नगर, दो दशक से अधिक समय से प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक स्व.के.पी.भटनागर के संरक्षण में चला करता था, किन्तु २००७ से श्री बालगोविन्द पालीवाल ने पं.मनोज कुमार मिश्र के सहयोग से इसे पूरा करते हुए एक संस्था की औपचारिकताओं को विकसित-व्यस्थित किया और आर्य समाज गोमती नगर को जिला आर्यसभा लखनऊ, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.से सम्बद्ध कर विकास पथ पर अग्रसर किया। डॉ.वी.पी.कपूर, शिवधर मौर्य, सुश्री सुमन पाण्डे, अमर सिंह, सौरभ सिन्हा, राम प्रसाद श्रीवास्तव, किशोर जी, वासुदेव वर्मा, लालजी मौर्य, राजीव मेहतानी जैसे प्रबुद्ध लोगों का सान्निध्य सुलभ है। श्री शिवधर जी आर्य समाज इन्दिरा नगर के लम्बे समय तक कर्ता धर्ता रह चुके हैं।

आर्य समाज गोमती नगर का संचालन सूत्र श्री पालीवाल के हाथों में होने के कारण यह आशा करना निरर्थक नहीं होगा कि यहाँ निकट भविष्य में आर्य समाज मंदिर का भी निर्माणा होकर रहेगा। श्री पालीवाल के जीवन का इतिहास बताता है कि आप जहाँ कहीं भी अपने बैंक के सेवाकाल में रहे- वहाँ आर्य समाज मंदिर का निर्माण हुआ अथवा उसको विकास-विस्तार मिला। निम्नांकित बिन्दु इस धारणा की पुष्टि के लिए पर्याप्त हैं-

(१) आनपारा सोनभद्र में १९९४ से १९९७ के मध्य आप बैंक अधिकारी थे। उन दिनों वहाँ आर्य समाज में दो ग्रुप थे- एक नागरिकों का दूसरा प्राविधिक अधिकारियों का। दोनों ग्रुपों ने पालीवाल जी पर भरोसा किया और इन्हें आर्य समाज का मंत्री बनाया। आपके कार्यकाल में ही आनपारा में भव्य आर्य समाज मंदिर का निर्माण हुआ। (२) इलाहाबाद में सिंडीकेट बैंक की ई.सी.ओ. शाखा के प्रबंधक पद पर रहते हुए- आर्य समाज कटरा प्रयाग ने आपको उपाध्यक्ष बनाया। आपकी सहयोग भावना और औदात्य से प्रभावित होकर मुहम्मद रईस नामक मुस्लिम व्यक्ति के विशिष्ट दान से सन् २००१ में आर्य समाज मंदिर को विस्तार मिला। आर्य समाज कटरा प्रयाग में मु.सईद के नाम की दान पट्टिका आज भी देखी जा सकती है। (३) फैजाबाद में बैंक के शाखा प्रबंधक के रूप में आर्य समाज फैजाबाद को भी आपका पूर्ण सहयोग मिलता रहा। आपके प्रभाव से आर्य समाज को ऐसी दानराशि मिलती रही, जिससे भवन के नवीनीकरण में मदद मिलती रही तथा यज्ञादि कार्यक्रमों को भी अपेक्षित गरिमा की प्राप्ति हुई।

आर्य समाज गोमती नगर को तो बहुत कार्य करना है। आर्य समाज का अपना भवन होना परमावश्यक है। गोमती नगर लखनऊ का बृहत्तम क्षेत्र है- यहाँ सम्पन्न समृद्ध प्रख्यात लोगों के आवास हैं। आर्य समाज की दृष्टि से काफी सक्षम पं.दीनानाथ शास्त्री जैसे सामाजिक सरोकारों से समृद्ध विद्वान् तथा आचार्या डॉ. निष्ठा विद्यालंकार जैसी विदुषी सम्प्रति गोमती नगर में हैं। योगऋषि स्वामी रामदेव जी के प्रतिनिधि योग शिक्षक पीयूषकान्त भी यहीं विकास खण्ड सेक्टर-५ में हैं। यदि गम्भीरता पूर्वक इस अभियान को अपने हाथ में ले लेंगे तो महर्षि दयानन्द की कीर्ति पताका को गोमती नगर में अनन्तकाल तक फहराते रहने से कोई रोक नहीं पायेगा-'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु'।

जहाँ तक 'आर्य लोक वार्ता' का सम्बन्ध है, जो भी कोई आर्य समाज मंदिर गोमती नगर के निर्माणार्थ स्थान या भूखण्ड अथवा पुष्कल राशि दान करेगा, हम उसका विवरण अवश्य प्रकाशित करेंगे। **-सम्पादक**

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' के फरवरी अंक के

मुखपृष्ठ पर प्रकाशित श्री क्षितीश वेदालंकार का आलेख 'वैदिक धर्म में राष्ट्र की उपासना भी धर्म का अंग है' में महर्षि दयानन्द द्वारा राष्ट्रीय चेतना को दिए गए नए आयामों की सुविचारित प्रस्तुति है। इसमें निष्कर्षरूप में यह व्यक्त किया है कि राष्ट्र-चेतना ही विश्व चेतना में पर्यवसित होती है। 'विनय पीयूष' के अन्तर्गत श्री अमृत खरे द्वारा यजुर्वेदीय मंत्र का अतीव सुस्पष्ट सत्प्रेरक हिन्दी-रूपान्तर है जिसे ध्यान में रखकर तदनुरूप आचरण द्वारा हम तमस् से मुक्त प्रकाशमय जीवन जी सकते हैं। 'शुभाकांक्षा' स्तंभ में अनेक विचारकों/सुधी पाठकों के रुचिर मन्तव्य हैं। 'अक्षर लोक' में संस्मरण, कहानी, उपन्यास विधा की तीन कृतियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विज्ञापन है। 'मनुष्य का विराट रूप' शीर्षक भी आनन्द कुमार का लेख अत्यन्त गम्भीर विचारपरक है। 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' शीर्षक पं.रामचन्द्र देहलवी का आलेख (व्याख्यानमाला-६) गहन अध्यात्म-दर्शनपरक चिन्तन से भास्वर है। यह वास्तविकता का बोध कराने में सक्षम और सहज संगत है। 'काव्यायन' स्तंभ में सर्वश्री श्रीप्रकाश जी व्याकुल, महाकवि पं.अनूप शर्मा, सुश्री रामा आर्य 'रमा', डॉ.कैलाश निगम, साधुशरण वर्मा 'सरन', उमेश राही, महाकवि जयशंकर 'प्रसाद', अखिलेश निगम 'अखिल' एवं गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की सरस प्रेरक रचनाएं हैं। जो पाठकों के मनःप्रसादन में सर्वथा सक्षम हैं। महाकवि 'प्रसाद' और अनूप शर्मा की कविताएँ तो अन्यतम हैं ही। इसके सम्पादकीय के अन्तर्गत सम्पादक ने 'भारत रत्न की फीकी चमक' शीर्षक से स्वामी रामदेव जी की इस टिप्पणी पर सुविचार पूर्ण टिप्पणी की गयी है कि आज तक किसी संन्यासी को भारत रत्न क्यों नहीं दिया गया? उपयुक्त तर्कों के आधार पर 'भारत रत्न' सम्मान के योग्य केवल दो ही महापुरुषों के नाम निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किए गए हैं- वे हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द। यही नाम वास्तव में उक्त प्रतिष्ठित सम्मान के सच्चे अधिकारी हैं। इसके अतिरिक्त आर्य समाज के विविध आयोजनों से संबद्ध स्थानीय तथा बाह्य जनपदों की सूचनाएँ हैं। *साहित्यिक उपलब्धियों/आयोजित कार्यक्रमों से सम्बन्धित समाचार* हैं। कतिपय अन्य समाचार भी इस प्रतिष्ठित पत्र में दृष्टिगत होते हैं। समग्रतः 'आर्य लोक वार्ता' का यह अंक भी इसके पूर्व अंकों की भाँति ही अपना उच्च स्तर बनाये रखने में सक्षम है।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
78, त्रिवेणी नगर-1, लखनऊ-20

***

आर्य लोक वार्ता का प्रत्येक अंक सुरुचि

पूर्ण तथा विशुद्ध ज्ञान से परिपूर्ण होता है। आपके द्वारा विषय चयन की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। फरवरी अंक में श्री क्षितीश वेदालंकार के लेख में ऋषि दयानन्ध के राष्ट्रचेतना विषयक दिए गए विचार आज भी प्रासंगिक हैं तथा भक्ति के नाम पर समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने की नितांत आवश्यकता है। धर्मभीरु जनता पूजा पाठ का दिखावा करके ईश्वर से सबकुछ पा लेना चाहती है। वह कर्म और ज्ञान से दूर रहना चाहती है। स्वामी दयानन्द जी के निर्देश भारत के उत्थान के लिए समीचीन हैं किन्तु राजनेता पथ भटक गए हैं और वे देशसेवा के नाम स्वयं सुखभोगी बन गए हैं। व्यक्ति पूजा और पाखण्ड पूर्ण भक्ति को त्यागकर हमें राष्ट्र की उपासना करनी चाहिए। बाबा रामदेव के माध्यम से भारत रत्न सम्मान की आपने अच्छी खबर ली है। सचमुच यह सम्मान अब राजनीतिक प्रभाव में दिए जा रहे हैं और योग्य राष्ट्रभक्तों की उपेक्षा की जा रही है। श्रीमती कुमुद गुप्त का जीवन परिचय अच्छी शिक्षा प्रदान करता है। अन्य स्तम्भ विनय पीयूष, शुभाकांक्षा, सत्यार्थ प्रकाश वार्ता, वेद प्रवचन मुझे बहुत प्रिय हैं तथा इसमें गम्भीर ज्ञान सहज सरल भाषा में मिल जाता है। इस अंक में जयशंकर प्रसाद और अनूप शर्मा जैसे ख्यातिप्राप्त कवियों के साथ अन्य सभी कवियों की रचनाओं ने मुत्रमुग्ध किया। आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

-नमिता वैश्य
प्रा.अ., खालेगाँव, मसकनवाँ, गोण्डा (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' मेरे लिए एक-

संजीवनी औषधि के रूप में है। स्वाध्याय ही जीवन है- इस तथ्य को हृदयंगम करते हुए में इसके प्रत्येक अंक के एक एक शब्द को ध्यान और मनोयोग से पढ़ती हूँ और उसे समझने का भी यत्न करती हूँ। अभी पिछले महीने मैं एक दुर्घटना का शिकार होकर काफी अस्वस्थ हो गई और मुझे ऑपरेशन के दौर से गुजरना पड़ा। उन्हीं दिनों 'व्यक्ति-विशेष' स्तंभ के अन्तर्गत मेरे सम्बन्ध में 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित लेख देखने को मिला। उक्त लेख ने मेरे मनोबल को बढ़ाने तथा अस्वस्थता की दशा में मुझे काफी सहारा दिया। जो कुछ प्रशंसात्मक आपने मेरे संबन्ध में लिखा है, मैं उसके कतई काबिल नहीं हूँ, यह आपकी महानता है कि मुझे अपनी लेखनी का विषय बनाया। 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित पंडित रामचन्द्र देहलवी का लेख 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' ने मुझे बहुत प्रभावित किया और आस्था को सही दिशा प्रदान की है। इसके अलावा सबसे मुख्य बात जिसने मुझे यह विचार प्रस्तुत करने को बाध्य किया है वह है- 'विनय-पीयूष' जिसमें गीतकार श्री अमृत खरे का वेद मंत्र का काव्यानुवाद प्रकाशित किया जाता है। वेदमंत्र के अनुवाद प्रायः काफी नीरस और शुष्क हो जाते हैं, उसके द्वारा भाव बोध नहीं हो पाता है किन्तु साहित्य में पहली बार यह अमृत जी का काव्यानुवाद हृदय पर गहरी छाप छोड़ जाता है।

वेदमंत्र का अर्थ समझे बिना उसके आनन्द की अनुभूति मनुष्य को भला कैसे प्राप्त हो सकती है? अन्य कोई अनुवाद भी उस आनन्द की अनुभूति नहीं करा सकता है किन्तु श्री अमृत जी द्वारा किया गया काव्यानुवाद हमें वही आनन्द प्रदान करता है जो वेदमंत्र में निहित है। 'आर्य लोक वार्ता' के एक अंक में प्रकाशित यजुर्वेद के मंत्र (अध्याय-१२, मं.-६३) का जो सरस अनुवाद अमृत जी ने किया है, वह मैं कभी भूल नहीं सकती हूँ और उसे बार बार गाती हूँ, गुनगुनाती हूँ और उससे दुःखों की निवृत्ति होती है। अन्य पाठक भी इस प्रकार के अनुवाद से लाभान्वित, आनन्दित और सुखी हो सकते हैं। वे काव्य पंक्तियां इस प्रकार हैं-

तन-मन तो जकड़ा हुआ मिला
प्रारब्धों के दृढ़ बंधन में,
कर्मो को फल को भोगे बिन
है मुक्ति कहाँ इस जीवन में,

आनन्द लोक ले जा इसको,
तू काट बंध, तू तीक्ष्णधार!

अनुवादक कवि को मेरा शत-शत नमन। गीत की कोमलता और सुन्दरता का मूल कारण मेरी समझ में यह आता है कि अमृत जी स्वयं एक श्रेष्ठ गीतकार हैं। हिन्दी साहित्य को उनपर गर्व होना चाहिए। ऐसी शब्द-रचना और भावानुभूति बिना दैवी कृपा और आशीर्वाद के नहीं मिल सकती और अमृत जी को वह प्राप्त है। 'आर्य लोक वार्ता' को ऐसी रचना के प्रकाशन हेतु मैं बार-बार धन्यवाद देती हूँ।

-श्रीमती कुमुद गुप्त
बी-1/112, सेक्टर-जी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' फरवरी अंक के

अग्रलेख में क्षितीश वेदालंकार ने मनीषी के मुक्तिमार्ग, ज्ञानमार्ग और कर्ममार्ग की सम्यक विवेचना प्रस्तुत की गई है। यह लेख 'आप्त पुरुष ऋषि दयानन्द-मेरी दृष्टि में' पुस्तक से संकलित है तथापि शिवरात्रि पर्व पर विषय यथार्थ का बोध कराता है। भक्ति के दो ही लौकिक मार्ग माने गए हैं- सगुण और निर्गुण और दोनों का अध्यात्म की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। ऋषि दयानन्द जी ने वेदसम्मत ज्ञान-कर्म का प्रतिपादन किया और उन्होंने आत्म चेतना के साथ राष्ट्र चेतना जगाने का अतुलनीय प्रयास किया। निसंदेह ऋषिवर ने आर्यत्व का बोध कराकर भारत को स्वतंत्र कराने की अलख जगायी। भारत रत्न प्रसंग में आपका सम्पादकीय चिन्तन सर्वथा प्रशंसनीय है तथा बाबा रामदेव की सोच को ठीक ही पल्लवित किया है कि भारत के सच्चे सपूतों स्वामी विवेकानन्द तथा ऋषि दयानन्द को भारत रत्न सम्मान दिया जाना चाहिए। 'विनय पीयूष', 'व्यक्ति विशेष', 'वेद प्रवचन' प्रस्तुतियों में प्रेरक एवं ज्ञानवर्द्धक जानकारी दी गई है। 'मनुष्य का विराट रूप' शृंखला समापन से मन क्षुब्ध हुआ, आशा है शीघ्र नई शृंखला पढ़ने को मिलेगी। 'अक्षर लोक' से नई पुस्तकों की जानकारी मिली। कालजयी काव्य में जयशंकर प्रसाद के कामायनी काव्यांश से नई ऊर्जा प्राप्त हुई। अन्य काव्यसृजन में श्रीप्रकाश जी व्याकुल, डॉ.कैलाश निगम, अखिल, अनूप शर्मा, रामा आर्य आदि की मनोरम रचनाओं ने रससिक्त किया। सम्प्रति होली के रस-रंग के वातावरण में आगामी लोकसभा चुनावों की हलचल बढ़ गई है। अस्तु, सभी को मिलन पर्व की स्नेहमय मंगलकामनाएँ!

बरसे रंग-गुलाल, झमाझम होली में।
मचा चुनाव-धमाल, झमाझम होली में।
आप सभी को शुभकामना बधाई है-
झाड़ो मुफ्त का माल, झमाझम होली में।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

अक्षर लोक

श्रीरामप्रिया सीता (उपन्यास)
रचनाकार : डॉ.स्नेह ठाकुर
प्रस्तुति : हार्डबाउण्ड/पृष्ठ संख्या ४५४
मूल्य : पाँच सौ पचास रुपये
प्रकाशक : स्टार पब्लिकेशंस प्रा.लि., ४/५बी, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११० ००२

डॉ.स्नेह ठाकुर विरचित उपन्यास 'लोक नायक राम' २०१५ में प्रकाशित हुआ था। रचनाकाल के दिनों में ही 'श्रीरामप्रिया सीता' की परिकल्पना भी लेखिका के मन-मस्तिष्क में उमड़ती-घुमड़ती रही थी, जो प्रस्तुत उपन्यास के रूप में साकार हुई है। उपन्यास की कथावस्तु से पाठकवर्ग भलीभाँति परिचित हैं, तथापि लेखिका की अपनी 'दृष्टि' तथा 'सम्प्रेषण शैली' रचना में नवीनता भरती चलती है। सहज-सरल संस्कृतनिष्ठ हिन्दी में लोकशैली की छौंक लगाकर लेखिका ने रचना का रोचक बना दिया है। भारतीय सभ्यता संस्कृति, साहित्य और रामकथा में रुचि रखने वाले पाठकों को यह उपन्यास अवश्य ही भायेगा। पुस्तक पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है।

मानस चिन्तन (निबन्ध संग्रह)
रचनाकार : डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड/पृष्ठ संख्या २१६
मूल्य : एक सौ पंचान्नबे रुपये
प्रकाशक : अनंग प्रकाशन बी-१०७/१, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्र, उत्तरी घोंडा, दिल्ली-११००५३

'मानस चिन्तन' में 'मानस' से तात्पर्य 'रामचरितमानस' से है। रचनाकार डॉ.चन्द्रपाल शर्मा की 'रामचरितमानस' में विशेष रुचि है। इसका उन्होंने खूब डूबकर चिन्तन, मनन, अध्ययन और विश्लेषण किया है। ग्रन्थ में संग्रहीत चौबीस निबन्धों में न केवल उन्होंने रामकथा को नये-नये सन्दर्भ प्रदान किये हैं, वरन् सशक्त तथ्यों और प्रमाणों के साथ नयी-नयी स्थापनाएँ भी की हैं। स्पष्ट है कि डॉ. शर्मा एतदर्थ सतत् शोधरत रहते हैं और नये सन्दर्भों को प्रामाणिकता और वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसते चलते हैं। अनेक निबन्धों के विषय पाठकों की जिज्ञासा को उभारने में सक्षम हैं, यथा 'मानस में काम व क्रोध', 'राम व्यक्ति नहीं, सिद्धान्त', 'रावण का दृढ़ भक्तिभाव', 'दलित साहित्य के प्रथम कवि तुलसी', 'राम : मानव या ईश्वर' आदि। 'मानस चिन्तन' डॉ.चन्द्रपाल शर्मा की ज्ञान में पकी और भाव में पगी एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसे पाठक रुचि पूर्वक पढ़ेंगे और गर्वपूर्वक अपने पुस्तक-संग्रह में सहेजेंगे।

'आर्य्य लोक वार्ता' के आने की जब

प्रतीक्षा बढ़ जाती है, तो यदा-कदा तो सम्पादक जी के फोन करना पड़ता है। फरवरी-२०१६ का अंक मेरे सामने है। क्षितीश जी के अग्रलेख में भारतीय राष्ट्रचेतना की विस्तृत झाँकी मिलती है। श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्रधारी रूप को भागवत् के दशम स्कन्द में जो रसिक शिरोमणि बनाया है, वह बौद्धिक व निष्पक्ष चिन्तों को व्यथित करता है। फिर भी हिन्दू धर्म पर आज जो चौतरफा आक्रमण हो रहा है, उसे देखते हुए हमें सनातनी, आर्यसमाजी, शाक्त, शैव आदि के भेदों में न पड़कर राम-कृष्ण के भक्तों और शंकराचार्य, दयानन्द सरस्वती व विवेकानन्द के वंशजों को एक स्वर में आवाज लगाते हुए अपने अतीत के वैभव व वर्तमान की चुनौतियों पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। दयानन्द सरस्वती के सुधारों का हम कितना पालन कर रहे हैं। सम्पादकीय में भारत रत्न की फीकी चमक पर ध्यान दिलाया गया। इस देश के दो प्रधान मंत्रियों ने अपने शासनकाल में स्वयं भारत रत्न लिया है। अब अन्दाजा लगा लें कि उस समय देश के विपक्षी नेता उस सम्मान को किस दृष्टि से देख रहे होंगे। मैं सहमत हूँ कि मरणोपरान्त यह सम्मान नहीं देना चाहिए। साथ ही यह भी जोड़ता हूँ कि गांधी, पटेल, दयानन्द, विवेकानन्द प्रभृति विभूतियाँ इस उपाधि से बहुत बड़े हैं। सम्मान मांगने से नहीं मिलता, कार्य सम्मान दिलाते हैं। व्यक्ति विशेष में मेरा और मेरी पुस्तक का सम्पादक जी ने उल्लेख किया है, उसके लिए आभारी हूँ। आज जब शोधार्थी पृष्ठ के पृष्ठ उतारकर अपना बता देते हों, वहाँ छोटी सी घटना का उल्लेख सम्पादक की उदारता का उदाहरण है। सभी स्थायी स्तम्भ प्रभावी हैं। काव्यायन में कामायनी के लज्जा सर्ग का अंश पढ़कर आनन्द आ गया। सन् १९५९ में एम.ए. के पाठ्यक्रम में कक्षा में पढ़ते समय का स्मरण हो आया। 'उज्ज्वल वरदान चेतना का, जिसे सब कहते हैं' सौन्दर्य की अनुपम परिभाषा है। ऐसा सौंदर्य देखकर ही कालिदास का दुष्यन्त सहसा कह उठा था-'अहो लब्धं नेत्र निवार्णम्'। अखिलेश निगम पिछले वर्ष नाथद्वारा में मेरे साथ मंच पर थे। यह एक विनम्र युवक प्रशासनिक पद के अहंकार से मुक्त एक सहृदय कवि है। हिन्दी में गजल लिखने वालों को 'अखिल' के सन्देश को पढ़ना चाहिए। 'रमा' जी बारहमासा लिख रही हैं। परम्परा में बाहरमासा में विरह वर्णन होता रहा है। यहाँ अवलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण है। अतः बधाई। गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने बहुत अच्छा प्रयोग किया है-'सरसों पीले हाथ कर, पहुँच गई ससुराल' ऐसा वही लिख सकता है, जिसने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया हो।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

धारावाहिक-1 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

आर्य-संस्कृति के विषय में बहिरंग-दृष्टि कई पुस्तकें लिखी गयी हैं। यह संस्कृति कब उत्पन्न हुई, कहां उत्पन्न हुई, ऐतिहासिक दृष्टि से कहां-कहां पहुँची? हमने इस पुस्तक में अन्तरंग-दृष्टि से विचार किया है। आर्य-संस्कृति क्या है, इसके मूल-तत्त्व क्या हैं, उनका वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार क्या है, वर्तमान कालीन विचारधारा में उनका क्या स्थान है, भारत के ऋषि-मुनियों की जीवन के प्रति दृष्टि क्या थी, संस्कृति के जिन मूल तत्त्वों का उन्होंने दर्शन किया था उन्हें जीवन में क्रियात्मक तथा व्यावहारिक रूप किस प्रकार दिया था- इन्हीं सब बातों का इस पुस्तक में विवेचन करने का प्रयत्न किया गया है।

भूमिका

पिछले दिनों योरुप से फ्रैंक बुकमैन की दो सौ स्त्री-पुरुषों की मंडली भारत में आयी, और उन्होंने जगह-जगह एक बात की धूम मचा दी। उनका कहना था कि वे संसार को एक नये सिरे से बनाना चाहते हैं। अबतक हमने विश्व के विकास में ईर्षा-द्वेष, लूट-खसोट, छीना-झपटी को आधार बनाकर सब-कुछ किया, इससे लड़ाई-झगड़े-अशान्ति बढ़ी, अब हम इन तत्त्वों के स्थान में सत्य, प्रेम, सहानुभूति, त्याग, तपस्या को आधार बनाकर विश्व का नव-निर्माण करना चाहते हैं। इस विचारधारा को उन्होंने 'नैतिक-सैन्यीकरण' (Moral Re-armament) का नाम दिया है। भौतिकवाद के गढ़ योरुप में आध्यात्मिकता की इस प्रकार की प्रतिक्रिया का उत्पन्न हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। भारत के ऋषि-मुनियों ने सहस्रों वर्ष पहले, अनुभव से, यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि भौतिकवाद जिन तत्त्वों आधार बनाकर चलना चाहता हे वे सारहीन हैं, उन्हें जीवन की नींव में डालकर चलने से मनुष्य एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। आजतक काम-क्रोध-लोभ-मोह को आधार बनाकर चलने से दुनियाँ कहां तक आगे बढ़ी?

भारत के आध्यात्मिक विचारकों का कहना यह था कि और तो और, भौतिकवाद भी इन तत्त्वों के सहाने अपने भवन का निर्माण नहीं कर सकता। कौन भौतिक-वादी है जो मार-काट, झूठ, चोरी, बेईमानी और संयमहीनता को ठीक कहता हो? कोई नहीं कहता। परन्तु क्यों नहीं कहता? जब, जो दीखता है वही सत्य है, जो नहीं दीखता वह झूठ है, तब तो स्वार्थ ही संसार का अंतिम लक्ष्य हो सकता हे, परार्थ, सेवा, प्रेम, मैत्री, बन्धुत्व- ये सिर्फ मन परचाने के तत्त्व ही हो सकते हैं, ऐसे तत्त्व जो जबतक स्वार्थ को सिद्ध करें तबतक ठीक, जहां व्यक्ति के स्वार्थ में बाधक पड़ें, वहां गलत। भौतिकवादी दृष्टि से ऐसा ही होना चाहिये, परन्तु आश्चर्य की बात है कि भौतिकवाद भी उन्हीं तत्त्वों का नाम लेता है जिनका नाम अध्यात्मवाद लेता है। सचाई, प्रेम, ईमानदारी और इनसे मिलते-जुलते तत्त्व जो अध्यात्मवाद की नींव में पड़े हैं उन्हें भौतिकवाद भी छोड़ना नहीं चाहता। प्रश्न यही है कि भौतिकवाद इन्हें एकदम छोड़ देने से क्यों घबराता है? इस प्रश्न का उत्तर यही हो सकता है कि भौतिकवाद इन आध्यात्मिक तत्त्वों को इसलिए नहीं छोड़ना चाहता क्योंकि उसे भी दीखता है कि घोर-से-घोर जड़वादी जगत में सचाई से ही काम चलता है, झूठ से नहीं, प्रेम से ही इस मशीन की कर्कशता को मिटाया जा सकता है, ईर्षा-द्वेष, लड़ाई-झगड़े से नहीं। हां, इसमें सन्देह नहीं कि क्योंकि अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि सार्वत्रिक तथा सार्वभौम रूप से अध्यात्म-तत्त्व हैं, भौतिकवाद के ये मूलतत्त्व नहीं हैं, इसलिए भौतिकवाद इन तत्त्वों को तभी तक पकड़ता है जबतक ये व्यक्ति के स्वार्थ को सिद्ध करते दीखते हैं, जहां इनसे व्यक्ति को अपना स्वार्थ सिद्ध होता नहीं दीखता वहीं वह इनसे किनारा काटने की कोशिश करता है। भौतिकवादी को सचाई तबतक ठीक जंचती है जबतक इससे उसका मतलब सिद्ध होता है, जहां स्वार्थ को ठेस लगी वहीं झूठ ठीक और सचाई गलत लगने लगती है। ईमानदारी भी तभी तक ठीक है जबतक अपना मतलब निकलता हो, जहां स्वार्थ बेईमानी से सिद्ध होता हो वहां बेईमानी ठीक मालूम पड़ती है। स्वयं कोई सच बोलना नहीं चाहता, परन्तु दूसरे को झूठ बोलते देख उसपर बरस पड़ता है; स्वयं हरेक बेईमानी करता है, दूसरे को ईमानदारी से न बरतते देख तिलमिला उठता है; अपने आप दुराचार करे तो कुछ नहीं, परन्तु दूसरे को सदाचार से हटते देखकर सहन नहीं करता। अपने लिये कुछ नहीं, दूसरे के लिए सब-कुछ। भौतिकवाद इस दृष्टिकोण पर टिकने का प्रयत्न करता है, परन्तु धीरे-धीरे यह जाहिर होने लगता है कि यह दृष्टि अपने को स्वयं काट डालती है। यह कैसे हो सकता है कि हम झूठ और बेईमानी को आधार बनायें और दूसरों से सच और ईमानदारी की आशा करें? यह स्थिति टिक नहीं सकती। दूसरे के लिए जो ठीक है वही हमारे लिये भी ठीक है-ऐसा मानने से ही व्यवहार चल सकता हैं सचाई, ईमानदारी, प्रेम-ये तत्त्व जब दूसरे में हों तभी मेरा काम चलता है, इसके बिना नहीं, तब मेरे में भी तो इन्हीं तत्त्वों के आने से संसार का कारोबार चलेगा। तभी तो प्रगाढ़ भौतिकवाद की अवस्था में भी सत्य, अहिंसा, प्रेम, विश्व-बन्धुत्व आदि के आध्यात्मिक तत्त्व मानो हमें चिपटे-से जाते हैं, हमें छोड़ते नहीं। हमारे चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने असत्य को सत्य, द्वेष को प्रेम, दुराचार को सदाचार छुरी की तेज धार की तरह चीरता हुआ आगे बढ़ जाता है। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिये होता है क्योंकि ये तत्त्व शाश्वत हैं, नित्य हैं, भौतिकवाद के लाख कोशिश करने पर भी हम इनसे अपना पीछा नहीं छुड़ा सकते। ये आध्यात्कि तत्त्व विश्व की रचना के आधार में नींव बनकर बैठे हुए हैं। जिसने कहा था-'सत्येनात्तभिता भूमिः'-सत्य पर भूमि टिकी हुई है-उसने एक ऐसी सचाई की घोषणा की थी जिसे सहस्रों वर्षों की भौतिकवाद की टक्कर भी नहीं हिला सकी। भौतिकवादी विश्व की रचना में कुछ भौतिक तत्त्वों का दर्शन करते हैं, ये तत्त्व ठीक हैं, इससे कोई इन्कार नहीं करता, परन्तु भारत के तत्त्व-वेत्ताओं ने कुछ ऐसे मूल-तत्त्वों के दर्शन किये थे जिन्हें अगर विश्व की नींव से खींच लिया जाय तो यह विशाल जगत् मिट्टी के ढेर की तरह नीचे आ गिरता है। इन तत्त्वों के दर्शन करने वालों ने आर्य-संस्कृति को जन्म दिया था, और उन्होंने इन्हीं तत्त्वों को आधार बनाकर जीवन के भव्य-भवन को खड़ा किया था। इस पुस्तक में हम जगह-जगह उन्हीं तत्त्वों के दर्शन करेंगे।

(1) आर्य-संस्कृति का केन्द्रीय-विचार

सदियों की पराधीनता के बाद आज भारत स्वाधीनता के मार्ग पर चल पड़ा है। अबतक हम दूसरों के दिखाये मार्गपर चलते थे, अब अपने निर्धारण किये हुए मार्ग पर चलेंगे। हमारा मार्ग क्या होगा-यह भविष्यत् बतलायेगा, परन्तु भूत के आधार पर, भारतीय विचारधारा की परंपरा के आधार पर, भारतीय-साहित्य के आधार पर यह बतलाया जा सकता है कि अब तक हमारे मार्ग की दिशा क्या रही है, हम पराधीन होने से पहले सैकड़ों नहीं, हजारों सालों तक किस मार्ग पर, और उस मार्ग पर भी किस दिशा की तरफ चलते रहे हैं। आर्य-संस्कृति के मूल-तत्त्वों को जानने वालों का यह निश्चित विचार है कि प्राचीन काल में भारत के ऋषि महर्षियों ने भारत को जिस मार्ग पर डाला था, इस देश के सम्मुख जो लक्ष्य निर्धारित कर दिया था, वही मार्ग और वही लक्ष्य हमारा और संसार का कल्याण कर सकता है, और अब फिर भारत को अपने तथा विश्व के कल्याण के लिए उसी मार्ग पर चलना होगा, उसी ध्येय को अपना लक्ष्य बनाना होगा। भारत के भविष्य का निर्माण अगर ऋषि-मुनियों के निर्धारित किये हुए लक्ष्य को सम्मुख रखकर होगा, तो यह देश फिर से संसार का मार्ग-प्रदर्शक बनेगा, फिर से दुनियाँ का सरताज होगा। परन्तु प्रश्न उठता है कि वह लक्ष्य क्या था, उसे कहां ढूंढें, कहां पायें?

उस लक्ष्य को पाने के लिए हमें 'आर्य-संस्कृति' के मूल-तत्त्वों की खोज में निकलना होगा। इस देश ने अपने यौवन-काल में एक 'संस्कृति' को जन्म दिया था जो अन्य संस्कृतियों से भिन्न थी। जैसे आजकल बड़े-बड़े शहरों पर गौरव किया जाता है, अमुक शहर में चालीस मंजिल के मकान हैं, साठ-साठ मील के दायरे में मकान-ही-मकान बने हुए हैं, वैसे भारतीय संस्कृति में बड़े-बड़े तपोवनों पर गौरव किया जाता था। अमुक ऋषि दण्डकारण्य में रहते हैं, अमुक ऋषि बृहदारण्य में निवास करते हैं! उस संस्कृति में शहर तो थे, परन्तु शहरों की अपेक्षा जंगल अधिक मशहूर थे। शहर चारों तरफ से ऐसे वनों से घिरे हुए थे, जिनमें तपस्वी लोग अपनी कुटियाओं में बैठे आध्यात्मिक तत्त्वों का चिन्तन किया करते थे। तपोवनों की वह संस्कृति आज की शहरों की सभ्यता से मौलिक रूप में भिन्न थी। हम इस पुस्तक में जगह-जगह उस संस्कृति का उल्लेख करेंगे, परन्तु क्योंकि आजकल के लोग तपवनों के उन ऋषि-मुनियों के लिए 'सभ्य' शब्द का प्रयोग करते हुए हिचकिचाते हैं इसलिये यह जान लेना आवश्यक है कि 'सम्भ्यता' तथा 'संस्कृति' में क्या भेद है, और अगर हम उन्हें 'सभ्य' न कहें, तो क्या हमारे किसी मानदंड से वे जीवन की तुला में हमसे नीचे उतरते हैं?

'सभ्यता' भौतिक और 'संस्कृति' आध्यात्मिक है-

'सभ्यता' तथा 'संस्कृति' में आधारभूत भेद है। सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा है; सभ्यता बाहर की चीज है, संस्कृति भीतर की चीज है; सभ्यता भौतिक विकास का नाम है, संस्कृति आध्यात्मिक विकास का नाम है। रेल, तार, रेडियो, मोटर, हवाई जहाज आदि-ये सब सभ्यता के विकास के निदर्शक हैं; सचाई-झूठ, ईमानदारी-बेईमानी, सन्तोष-असन्तोष, संयम-संयमहीनता आदि-ये सब संस्कृति के ऊंचे या नीचे विकास के निदर्शक हैं।

यह जरूरी नहीं कि संस्कृति के विकास में हम इस परिणाम पर ही पहुंचें कि हमें जीवन में सचाई से ही काम लेना चाहिए, झूठ से नहीं; ईमानदारी से ही रहना चाहिए, बेईमानी से नहीं; संतोष को ही लक्ष्य बनाना चाहिए, असन्तोष का नहीं; संयम से रहना चाहिए, असंयम से नहीं। हो सकता है, कोई देश ऐसी संस्कृति को ही अपनाये जिसमें झूठ, बेईमानी, असन्तोष, संयमहीनता आदि ही आधारभूत तत्त्व हों, परन्तु ऐसों को 'सु'-संस्कृत नहीं कहा जाता।

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-7(समापन किस्त)

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

जिस चीज का भी दुरुपयोग किया जाएगा वह हमारे लिए जहर होगा। इसी प्रकार यदि भगवान् को ठीक प्रकार हम ने न समझा तो वह हमारे लिए बजाय लाभदायक होने के अत्यन्त हानिप्रद हो जायेगा। लोगों ने ईश्वर के समझने में बड़ी भूल की है और किए जा रहे हैं। इस मिथ्या विश्वास और मूर्खता ने ऐसों को ही हानि पहुंचाई है। लोग धर्म के नाम पर अब तक ठगे जा रहे हैं और हानि उठा रहे हैं।

आचार एक शब्द है। उसमें पहले अति लगाने से वह अत्याचार बन जाता है। जिस वस्तु के साथ भी अति होगी वह बिगड़ जाएगी।

टॉमस पेन का वाक्य कि We cannot serve God in the manner we serve those who cannot do without such service. ईश्वर की उपासना का जो ढंग मैंने बताया है यह उसी ओर संकेत करता है। मनुष्य की सेवा जैसे की जाती है वैसे भगवान् या ईश्वर की नहीं की जा सकती। जो लोग ईश्वर की भी मनुष्य की भांति सेवा करना चाहते हैं वह कुमार्ग पर जा रहे हैं। उन्हें कुछ लाभ न होगा। ऋषि दयानन्द ने जब शिव पर चूहे चढ़ते देखे तो उन्हें यही तो ख्याल हुआ कि जो शिव चूहे को अपने ऊपर से नहीं हटा सकता वह जगत् की कैसे रक्षा कर सकेगा? इस ख्याल से सारी आगे की घटनाएं सम्बद्ध हैं।

तो मैं आपको बता रहा हूँ कि मूर्तियों का सदुपयोग कीजिए, दुरुपयोग छोड़ दीजिए।

मान लीजिए आपका एक बच्चा है। आपके पास एक घड़ी भी है। आपका बच्चा घड़ी पर चावल रखने लगे, दाल डालने लगे, लड्डू रखने लगे, जलेबियां चढ़ाने लगे, रायता उस पर डाल दे। सब चीज उस पर डालने लगे तो आप उसे ऐसा करते देखकर क्या करेंगे? क्या आप उसे डाटेंगे नहीं? मना नहीं करेंगे? अरे मूर्ख, घड़ी बिगाड़ेगा? क्यों इस पर यह चीजें डाल रहा है? बच्चा उत्तर दे कि पिता जी यह चलती है तो मैं इसे खिला व पिला रहा हूँ। क्या हर्ज है? पिता कहता है-क्या यह कोई वस्तु खाती है? क्या यह रायता व पानी पीती है जो तू इस पर डाल रहा है?

आप घड़ी के बारे में तो इतना फर्क कर रहे हैं लेकिन मूर्ति के बारे में यह तर्क क्यों नहीं करते? बुद्धि का प्रयोग हमें दोनों जगह करना चाहिये। जैसे घड़ी के ऊपर जलेबी चढ़ाना व्यर्थ है वैसे ही मूर्ति के ऊपर भी कोई चीज चढ़ाना व्यर्थ है। तो मूर्ति के ऊपर कोई चीज चढ़ाने या उसके सामने हाथ जोड़ने, लेट जाने या नाचने से न भगवान् की पूजा होती है और न धर्म की रक्षा।

हमको ईश्वर व प्रकृति दोनों का ही सही उपयोग करना चाहिए। ईश्वर के गुणों को हम धारण करें और श्रेष्ठ बनें। प्रकृति के पदार्थों का मनुष्यमात्र के भले के लिए प्रयोग करें। प्रकृति का दुरुपयोग हमें हानि पहुंचाएगा। किसी फारसी के शायर ने लिखा है-

अग सदसाल गब्र आतिश फरोजद।
चूंयकदम अन्दरां उफ्तद बिसोजद।।

गब्र कहते हैं आग के पुजारी को। यदि आग का पुजारी सौ साल तक आग को रोशन रखता रहे और एकदम उसमें कूद पड़े तो आग उसे फौरन जला देगी। आग वहां जरा भी लिहाज नहीं करेगी। आग प्राकृतिक पदार्थ है। उसका दुरुपयोग किया गया तो उसने परिणाम दे दिया।

प्रतिदिन लोग अन्धविश्वास या यूं कहिए कि मूर्खता से काम करने के कारण अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। क्या ऐसे लोग गंगा या यमुना मैया की जय बोलते हुए नहीं चले जाते हैं

जो तैरने की विद्या सीखे भी नहीं हैं और नदियों के पानी में घुस जाते हैं, बड़े जोर-जोर से गंगा मैया की जय, जमुना मैया की जय चिल्लाते हुए लोग चले जाते हैं? कोई नहीं रोकेगा ऐसे मूर्ख लोगों को। गंगा मैया या जमुना मैया ऐसे मूर्ख लोगों की प्रतीक्षा में है कि वे आवें और बिना तैरने की विद्या सीखे मुझ में घुसें। वह उन्हें पानी में ही दबोच लेगी और अपने बेटों, जल-जन्तुओं मछली, कछुओं आदि को खिला देगी। अपने नादान व मूर्ख बेटों का वह थोड़ा सा भी पक्षपात नहीं करेगी, उन्हें छोड़ेगी नहीं। सैकड़ों बार ऐसे दुःखद समाचार सुने जाते हैं कि अमुक युवक डूब गया, इस मुहल्ले का इकलौता बच्चा डूब गया। प्राकृतिक वस्तुओं के दुरुपयोग या नासमझी से किए उपयोगों का यह फल है।

इसी प्रकार जो ईश्वर की उपासना, बिना उसके गुण, कर्म व स्वभाव जाने अन्धाधुन्ध करते हैं उनको किंचितमात्र भी ईश्वर से लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। फारसी की प्रसिद्ध सूक्ति है- 'बेइल्म नतवां खुदारा शनाख्त।' इसका अर्थ है अज्ञानी भगवान् को नहीं जान सकता। इसलिए ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से परिचित होकर अपने को लाभान्वित करना चाहिए। यही उसकी सच्ची उपासना है, पूजा है और यही उसकी भक्ति है।

जड़ मूर्ति को पूजने से तो जड़ता के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।

।।ओ३म् शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।।

काव्यायन

अभिनन्दन का अभिनन्दन

❑डॉ. वेद प्रकाश आर्य

मातृभूमि के चरणार्चन पूजन वंदन का अभिनन्दन,
शुभ्रभाल देदीप्यमान कुंकुम चंदन का अभिनन्दन।
भारत की पावन धरती के वन नंदन का अभिनन्दन,
नंदनवन के रखवाले उस अभिनन्दन का अभिनन्दन।।

अभिनन्दन का वन्दन

❑महेशचन्द्र द्विवेदी

कहते तो इसको श्वान-युद्ध, पर सिंह-युद्ध सम होता है,
शूरवीर भी थर्राते हैं, इक युद्ध-यान समक्ष जब होता है,
क्षण क्षण मिसाइल दगती हैं, हर पल घातक होता है,
चालन-चातुर्य करता बचाव, रणकौशल बनाता विजेता है।

भारत के पुराने मिग विमान के चालक थे अभिनन्दन,
सामने था एफ-१६, ज्यूं पोमेरेनियन समक्ष अल्सेशन,
पर अभिनन्दन ने रखा धैर्य, सूझ-बूझ से काम लिया,
वीर तेरा वंदन! जो पाक-दर्प का काम तमाम किया।

-पूर्व डी.जी.पी., 'ज्ञान प्रसार संस्थान', 1/137, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

वीर अभिनन्दन

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

भारत के वायु-यान, बरसे प्रलय बम,
पाक के आतंकी मौत-छाँव चाँपने लगे।
शत्रु-सैन्य युद्ध-यान, उड़े आक्रमण हेतु,
आये हिन्द-सीमा सैन्य-ठाँव मापने लगे।
हिन्द वायु-वीर ने, उड़ाया शत्रु-यान एक,
भागे उल्टे पाँव अन्य, दाँव भाँपने लगे।
लिया अभिनन्दन को, पाक ने पकड़, किन्तु,
देख सिंह सी अकड़, पावँ काँपने लगे।।

ठान लिया प्रण वायु-सैन्य रण-बाँकुरों ने,
भस्म करना आतंकी ठौर बालाकोट के।
छूटे द्रुत मृत्यु बन, बारह 'मिराज' यान,
पड़ी कड़ी चोट पापी पाक-उर खोट के।
कहर मचाया घोर, रौंदे बम-वर्षण से,
तेरह ठिकाने ठौर-ठौर वन-ओट के।
हिंसक निशान मिटे नरता के शत्रुओं के,
पलक झपकते ही, सोये धूल लोट के।।

-78, त्रिवेणी नगर-1 डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ-20

पूरा कश्मीर हमारा है

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

आस्तीन के साँपों का सिर, कुचला जाए।
बजता है जो राग बेसुरा, बदला जाए।
आँख उठा न पाए कोई भारत पर,
विजयी पाने को अब निकला जाए।
भारत कभी नहीं भूलेगा, पुलवामा की चोट को।
कैसा लगा पाक तुझको जब झेला बालाकोट को।
भारत माता के सपूत कब युद्धों से डरने वाले,
सफल न होने देंगे, तेरी हर आतंकी चोट को।।
महा विषैले साँपों को है, दूध पिलाना ठीक नहीं।
कुत्तों, कौओं, गिद्धों को है, खीर खिलाना ठीक नहीं।
भागे थे कश्मीरी पण्डित, उनको वहीं बसाओ फिर,
घर में बैठे गद्दारों से हाथ मिलाना ठीक नहीं।
वीर सपूतों को जिसने छल-से धोखे से मारा है।
उन आतंकी दनुजों को, भारत माँ ने ललकारा है।
बन्दर घुड़की देने वालों, सीधी भाषा में समझो,
अखण्डता का अर्थ यही, पूरा कश्मीर हमारा है।

-117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-22

पूरा पाक अब लेना है!

❑डॉ. कैलाश निगम

अभिनन्दन जैसे जाँबाजों पर
नाज देश को है
ऐसे जाँबाजों को
कभी न भूल जाना है।
अर्थी उग्रवाद की
उठानी हमें मिलकर है
केशर की क्यारियों को
फिर महकाना है।
लक्ष्य अपना है
बिजली गिराना उन पर
जिन्होंने बनाया
इस देश को निशाना है।
आतंकवादी पत्थर
बाजों को कुचलना है
देश दुश्मनों को अब
धूल में मिलाना है।

बालक यहाँ के हैं
अभय शेरों साथ खेले
हमको किसी का भी
सहारा नहीं लेना है।
विश्व में उठाये शीस
गर्व से खड़ा नगेश
जिस पर विजय न
समझो चबेना है।
सीखी शिशुओं ने यहाँ
युद्ध की कला गर्भ से ही
जिनका खिलौना
रणभेरी या कि सेना है।
पाक कहता है यदि
काशमीर उसका है
हम कहते हैं पूरा
पाक अब लेना है।।

-4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

सियासत की बात होती है

❑उमेश 'राही'

सियासत में हर बार
मंदिर औ मस्जिद की बात होती है।
न जिन्दगी, न भुखमरी
न किसी जरूरत की बात होती है।
डर इस तरह समा गया है
अब हर माँ बाप के दिल में-
जहाँ बैठिये बस बेटी की
हिफाजत की बात होती है।।

कुछ गुण्डे अब शरीफ बन गये
अगौंछा गले में डाल कर।
अब लाशों के ढेर पर भी
शराफत की बात होती है।
जो कह गये थे, जाति वर्ग
सब मिटायेंगे समाज से हम
उनके दरबार में जाति की
तिजारत की बात होती है।।

भारत में गजब इंसाफ होगा
'उमेश राही' की कसम-
बच्चों की महफिलों में अब
सियासत की बात होती है।।

-खारघर, नवीं, मुम्बई-410210

कालजयी काव्य

मेरे नगपति मेरे विशाल!

❑रामधारी सिंह 'दिनकर'

कितनी मणियाँ लुट गईं, लुटा
कितना मेरा वैभव अशेष!
तू ध्यान मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।

कितनी द्रुपदा के बाल खुले?
कितनी कलियों का अन्त हुआ?
कह हृदय खोल चित्तौड़! यहाँ
कितने दिन ज्वाल-बसंत हुआ।

पूछे सिकता-कण से हिमपति!
तेरा वह राजस्थान कहाँ?
वन-वन स्वतंत्रता दीप लिये
फिरने वाला बलवान कहाँ?

तू पूछ अवध से, राम कहाँ?
वृन्दा! बोलो घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?

पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ, कहाँ इसने खोईं
अपनी अनन्त निधियां सारी?

री कपिलवस्तु! कह, बुद्धदेव
के वे मंगल उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन
तक गये हुए सन्देश कहाँ?

वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी शान कहाँ?
ओ री उदास गण्डकी! बता
विद्यापति कवि के गान कहाँ?

तू तरुण देश से पूछ अरे,
गूँजा कैसा यह ध्वंस राग?
अम्बुधि-अन्तस्तल बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग?

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गाण्डीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।

कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
'हर-हर-बम' का महोच्चार।

ले अँगड़ाई हिल उठे धरा,
कर निज विराट स्वर में निनाद।
तू शैलराट हुँकार भरे,
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद।

तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी आज तप का न काल।
नवयुग-शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल!

('हिमालय के प्रति' कविता के सम्पादित अंश, साभार)

नहीं पाक में कोई बच पायेगा।

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

बेनकाब नकली चेहरा, कर देंगे पाक! तुम्हारा।
बीन-बीन आतंकी मारेगा, हर वीर हमारा।।
भारत-नन्दन 'अभिनन्दन' ने पाक-विमान गिराया।
आक्रामक पाक-विमानों को अति दूर भगाया।।
बात शान्ति की करता, लेकिन आतंकी घर पाले।
सदा कारनामे रहते हैं, पाकिस्ताँ के काले।।
'पुलवामा' में धोखे से तूने वीरों को मारा।
इसीलिए भारत-वीरों ने, है तुमको ललकारा।।
कितनी बार पिटा तू हमसे, लेकिन बाज न आता।
भेज उग्रवादी चोरी से, तू हमको डरवाता।।
पैट्रन टैंक तुम्हारे हमने, सन पैंसठ में तोड़े।
हमने बाँगला देश बनाया, तब कर तूने जोड़े।।
'करगिल-युद्ध' मध्य भी तूने नाकों चने चबाए।
कितनी बार युद्ध में हमने, तुमको नाच नचाए।।
ऐ 'इमरान' न क्रिकेट समझो, युद्ध भयंकर होगा।
दीख पड़ेगा तू! मजार में, सदा-सदा को सोता।।
'एअर स्ट्राइक' से हमने तेरा 'बालाकोट' जलाया।
पर नापाक 'पाक' तू हमको समझ न पाया।।
'एफ सिक्सटीन' विमानों को ले हमें जगाने आया।
किन्तु पुराने मिग से हमने, उसको मार गिराया।।
अभी-अभी जम्मू में भी तूने है विस्फोट कराया।
आम नागरिक लोगों को है, अस्पताल पहुँचाया।।
धैर्य हमारा यदि टूटा तो प्रलय काल आयेगा।
नहीं 'अबोध' पाक में कोई मानव बच पायेगा।।

-चन्दा मण्डप', हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआदतगंज, लखनऊ-03

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा ने मनाया ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकर नगर में ऋषि बोधोत्सव का पर्व आर्य समाज मन्दिर में बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया जिसका संचालन मंत्री श्री योगेश कुमार आर्य ने किया। चार दिवसीय कार्यक्रम में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में लखनऊ से डॉ.(श्रीमती)निष्ठा विद्यालंकार ने पधार कर समारोह की शोभा में आकर्षक वृद्धि की।

कार्यक्रम में दिनांक १ से ४ मार्च, २०१६ तक प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ एवं उपदेश तथा सायंकाल भजन एवं उपदेश होते रहे। प्रवचन एवं उपदेश आचार्य श्री ओम प्रकाश शास्त्री तथा देवनारायण पाठक एवं भजन श्रीमती अर्चना शास्त्री एवं श्री दिवाकर मौर्य के होते रहे। आर्य समाज टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य एवं सम्मानित सदस्यों ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके बताए हुए नियमों को अपने जीवन में आत्मसात् करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में आर्य समाज टाण्डा के समस्त सदस्यगण, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, डी.ए.वी.एकेडमी एवं दयानन्द बाल विद्या मन्दिर के समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाएं तथा समस्त कर्मचारी बन्धुओं ने बड़े ही उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का समापन ४ मार्च सायं डॉ.(श्रीमती) निष्ठा विद्यालंकार लखनऊ के प्रवचन, उपदेश एवं भजन के उपरान्त आर्य समाज टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जी के द्वारा आभार ज्ञापित करके किया गया।

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज कोटा ने साड़िया वितरित कीं

कोटा, ०८ मार्च। आर्य समाज कोटा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिहाड़ी श्रमिक महिलाओं को केशवपुरा स्थित दिहाड़ी श्रमिक स्थल पर साड़ियाँ बांटी गईं तथा महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकारों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने श्रमिक महिलाओं से कहा कि वैदिक संस्कृति में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। महिलाएँ स्वावलम्बी एवं सशक्त बनें जिससे समाज का समग्र विकास हो सके। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं को समानता का अधिकार दिलाया। साड़ी वितरण के इस अवसर पर डी.ए.वी.स्कूल कोटा की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, समाजसेवी डा.वेद प्रकाश गुप्ता, आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविंद पाण्डे, डी.ए.वी. के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य, आर्य समाज तलवंडी के पूर्व मंत्री लालचंद आर्य तथा किशनसिंह आर्य हरियाणा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

वाराणसी-समाचार

श्री बुद्धदेव आर्य दिवंगत

वाराणसी, ०६.०२.१६। कर्मठता के पर्याय, आर्यजनों और आर्य वीर दल सदस्यों के श्रद्धा-प्रेरणा केन्द्र श्री बुद्धदेव आर्य का निधन हो जाने से वाराणसी में सर्वत्र शोक की लहर दौड़ गई। आपका अन्त्येष्टि संस्कार आर्य विद्वान् डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कराया तथा शान्ति यज्ञ पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर की छात्राओं के वेदमंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ। श्रद्धांजलि सभा में डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री, श्री बेचन सिंह आर्य बगहा (मिर्जापुर), आचार्य प्रीति जी ने सविस्तार बुद्धदेव जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं प्रधान डॉ.धीरज सिंह तथा कृष्ण मुरारी ने स्व.बुद्धदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा) ने अपने शोकसंदेश में कहा है कि पूर्वांचल में आर्य समाज की गतिविधियाँ एवं आर्य वीर दल के संगठन की दृष्टि से बुद्धदेव जी की सेवाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य (पूर्व संचालक एवं अधिष्ठाता, आर्य वीर दल) ने कहा कि श्री बुद्धदेव जी ने श्री अवध बिहारी खन्ना के साथ मिलकर वाराणसी में सैकड़ों की संख्या में अनुशासित आर्य वीर दल के सैनिकों को संगठित किया था; जिसके परिणाम स्वरूप आर्य समाज लल्लापुरा के भव्य भवन का निर्माण हुआ तथा वाराणसी तथा इतर क्षेत्रों में भी सेवाकार्य में महती भूमिका निभाई। स्व. बुद्धदेव आर्य के 'आर्य लोक वार्ता' से घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। हार्दिक श्रद्धांजलि!

बलरामपुर-समाचार

आर्य समाज उतरौला का ८६वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज उतरौला, जिला बलरामपुर का ८६वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक ४ मार्च से ७ मार्च २०१६ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। उत्सव में प्रतिदिन प्रातः एवं सायं उभय सत्रों में भजन, प्रवचन होते रहे। इसके अलावा आर्य सिद्धान्त सम्मेलन, धर्मरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। उत्सव में स्वामी शिवानन्द (नेपाल), श्री कड़कदेव आर्य, रविदेव शास्त्री, भजनोपदेशक ठाकुर प्रसाद आर्य को आमंत्रित किया गया। समारोह के डॉ.एस.पी. श्रीवास्तव मुख्य अतिथि थे। श्री दिलीप कुमार आर्य, मंत्री आर्य समाज ने संयोजन किया तथा श्री रामदेव आर्य ने समारोह की अध्यक्षता की। *(प्रेमचन्द्र शर्मा)*

लखनऊ-समाचार

श्रीमती शीला पाल की पुण्यतिथि

एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, योगाश्रम, अलीगंज में श्री पाल प्रवीण की माता श्रीमती शीला पाल की पावन स्मृति में उनके जन्मदिवस एवं पुण्यतिथि पर यज्ञ भजन सत्संग का आयोजन २४.०१.१६ को हुआ। प्रातः ११.३० बजे से प्रारंभ हुए इस आयोजन की शुरुआत यज्ञ से हुई। श्री सेवक राम आर्य के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् श्री पाल प्रवीण ने अपनी माताजी द्वारा लिखित एक भाषण को सुनाया- यह भाषण माताजी ने अपनी पौत्री को विद्यालय में आयोजित वाक् प्रतियोगिता हेतु लिखकर दिया था, जिसका शीर्षक था-'मैं बड़ी होकर क्या बनना चाहती हूँ'। कैप्टेन पाल प्रदीप की पुत्री सोनल को उक्त प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला था। श्रीमती शोभा सिन्हा ने प्रभुभक्ति का एक गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री शिवशंकर लाल वैश्य, सुरेश मिश्र, श्रीमती प्रमोद कुमारी, श्रीमती कमलेश पाल, श्रीमती ऊषा निगम, श्रीमती शशि रस्तोगी ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। श्री अभिषेक ने कार्यक्रम का संयोजन किया तथा जलपान की व्यवस्था की। श्री पाल प्रवीण ने आगन्तुकों को धन्यवाद दिया।

यज्ञ एवं गोष्ठी

दिनांक १७ जनवरी २०१६ को यज्ञ भजन प्रवचन श्रीमती सुन्दरी दरयानी के निवास एम.एस.१२१, सेक्टर-डी अलीगंज में प्रातः ११.३० बजे आयोजित हुआ। श्री सेवकराम जी के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। अलीगंज वैदिक सत्संग की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सुन्दरी दरयानी जी की गरिमामयी उपस्थिति से यज्ञ गोष्ठी की शोभा बढ़ गई जिसमें उनके पुत्र हरीष व लक्खी दरयानी, उनकी पुत्रवधू एवं पौत्रियों ने श्रद्धा पूर्वक आहुतियाँ दीं। इस अवसर श्री पाल प्रवीण, प्रेममुनि, शिवशंकरलाल वैश्य, वीरेन्द्र स्वामी, सुरेश मिश्र, श्रीमती कमलेश पाल, श्रीमती प्रमोद कुमारी, डा.दिनेश आदि ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। भजनों के उपरान्त श्री सेवक राम जी ने एक वेदमंत्र की व्याख्या की तथा श्री पाल प्रवीण ने सभी का धन्यवाद किया। *(पाल प्रवीण)*

गृह प्रवेश

श्री निशीथ कंसल एवं श्रीमती रजनी कंसल (डी-५, विवेकानन्द पुरी) की सुपुत्री सुश्री नेहा कंसल के महानगर स्थित शालीमार गैलेण्ट के नवनिर्मित अपार्टमेंट में गृहप्रवेश का संस्कार वैदिक विधि विधानानुसार डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में रविवार, १७ मार्च '१६ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नेहा जी, पुत्र आदित्य और पुत्री आद्या सहित यजमान के आसन पर विराजमान हुईं तथा श्रीमती रजनी एवं निशीथ कंसल, मामा-मामी श्री वीरेश मित्तल एवं श्रीमती दीपिका मित्तल ने अन्य आसनों को सुशोभित किया। श्री गौरव लूथरा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सभी ने नेहा को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

लखनऊ-समाचार

ऋषि बोधोत्सव पर भव्य शोभायात्रा

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्वावधान में ०४ मार्च, २०१६ को महाशिवरात्रि के अवसर पर विशाल शोभायात्रा बालसदन मोतीनगर से नगर आर्य समाज रकाबगंज तक निकाली गई। लखनऊ जनपद की सभी आर्य समाजों के सदस्यों एवं पदाधिकारियों द्वारा इस शोभायात्रा में अपने वाहनों के साथ भाग लिया गया। शोभायात्रा में सभी आर्य समाज के वाहनों पर वैदिक भजन एवं प्रवचन होते रहे एवं कई अन्य समाजों द्वारा पूरे रास्ते प्रसाद का वितरण किया गया। शोभायात्रा में आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य आर्य नरेश जी की उपस्थिति गौरवमयी एवं सभी के प्रेरणा का स्रोत रही। सभी वाहनों पर ओ३म् के झण्डे, महर्षि दयानन्द जी का चित्र, वेदानुकूल बैनर्स, प्रत्येक सदस्य के गले में ओ३म् के पटके एवं सिर पर नारंगी टोपी शोभायमान थी। *(पी.सी.जौहरी, मंत्री)*

ओमराज कम्पनी के कार्यालय का उद्घाटन

लखनऊ में राष्ट्र निर्माण पार्टी के प्रतिनिधि एवं प्रवक्ता श्री रज्जू भैया द्वारा संचालित ओमराज कम्पनी को उसका कारपोरेट ऑफिस मिल गया है। लखनऊ के प्रतिष्ठित क्षेत्र गोमती नगर के विभूति खण्ड स्थित हयात होटल के पास कम्पनी के कार्यालय का विधिवत् उद्घाटन हुआ। वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें चारों वेदों के शत-शत मंत्रों की आहुतियाँ दी गईं। यज्ञ में रज्जू भैया के बंधु एवं पारिवारिक जनों ने भाग लिया। 'आर्य लोक वार्ता' की शुभकामनाएँ! *(अमित वीर त्रिपाठी)*

'काव्यक्षेत्रे' काव्य गोष्ठी

१०.०३.२०१६। 'काव्य क्षेत्रे' साहित्यिक संस्था द्वारा बाल निकुंज बालिका इंटर कालेज मोहिबुल्लापुर में भव्य काव्यगोष्ठी आयोजित की गयी जो पूर्णतः होली और भारतीय सेना के पराक्रम को समर्पित रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुपरिचित आशुकवि कमलेश मौर्य 'मृदु' ने की। मुख्य अतिथि के रूप में शोभा दीक्षित 'भावना' तथा विशिष्ट अतिथि गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' रहे। गोष्ठी का शुभारम्भ शोभा 'भावना' की वाणी वन्दना से हुआ। तत्पश्चात् अशोक शुक्ल 'अनजान', लक्ष्मी शुक्ला, मनु बौछार, हरिमोहन वाजपेयी, 'विनम्र', शोभा दीक्षित, 'मृदु', विपिन मलिहाबादी, चेतराम अज्ञानी, मृगांक श्रीवास्तव, संदीप अनुरागी, राजेन्द्र कात्यायन, शाहिद, हरिप्रकाश 'हरि', कार्तिक मिश्रा की प्रस्तुतियों का श्रोताओं ने रसास्वादन किया। संचालन हरिमोहन वाजपेयी 'माधव' संस्था अध्यक्ष ने किया तथा आभार प्रदर्शन महामंत्री राजेन्द्र कात्यायन ने किया। *('विनम्र')*

श्री अमृत मुनि द्वारा अप्रतिम साहस और शौर्य प्रदर्शित

आर्यत्व की परिभाषा को मूर्तरूप देते हुए श्री अमृतमुनि वानप्रस्थी (पूर्वनाम श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी, से.नि.सहायक आयुक्त, आवास विकास परिषद, उ.प्र.लखनऊ) ने शातिर आतंकी लुटेरों द्वारा महिलाओं की रक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगा दी। (प्राप्त समाचार के अनुसार)-

समाज के लिए दुखद और युवाओं को शर्मसार कर देने वाली घटना १४ मार्च २०१६ की रात्रि में दिल्ली से आ रही रेलगाड़ी में घटी। रेलगाड़ी सहारनपुर स्टेशन से चलते ही कुछ दूरी पर चैन खींचकर रोक दी जाती है और कुछ युवकों द्वारा एक बोगी में महिलाओं की सोने की चेन, कुंडल तथा अंगूठी आदि लूटना प्रारम्भ हो जाता है। उस बोगी में उपस्थित सभी युवक जिनकी वह बहनें अथवा पत्नियां हैं चुपचाप देखते रहते हैं, कोई विरोध नहीं करता। जवानी शर्मसार हो रही थी। यह देखकर आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के एक वानप्रस्थी जिनकी आयु ७५ वर्ष की थी, ने अपने धर्म का पालन करते हुए उन लुटेरों को ललकारा तथा ऐसा करने से रोका। इसपर एक लुटेरे ने उन पर चाकू से आघात करना चाहा परंतु उन वृद्ध ने चाकू का फलक हाथ से पकड़ लिया जिससे उनका हाथ कट गया। फिर दूसरे लुटेरे ने उनके सिर पर अन्य हथियार से वार किया जिससे वह वानप्रस्थी घायल होकर गिर गये। यह देखकर लुटेरे तुरंत बोगी से भाग गये। परंतु बोगी में उपस्थित अन्य लोगों ने लुटेरों के विरुद्ध उन वानप्रस्थी का साथ नहीं दिया। फिर उन वानप्रस्थी ने आर्य वानप्रस्थ आश्रम के प्रधान को सारी घटना फोन पर बतायी तो प्रधान जी आश्रम से कुछ लोगों को लेकर कार द्वारा रुड़की स्टेशन से उन्हें उतारकर जौलीग्रांट अस्पताल पहुंचे जहां उनका विधिवत उपचार हुआ जिसमें उनके सिर में चार टांके तथा हाथ में छः टांके आये। रात को ही उनको उपचार के देकर घर भेज दिया था। अब वह ठीक हैं। नारी का सम्मान करना और उसकी रक्षा करना हम आर्यों की सत्य सनातन वैदिक संस्कृति रही है। परन्तु आज का युवा भोगवादी संस्कृति में लिप्त होने के कारण अपने मौलिक कर्तव्य को भूल गया है। *(अमित वीर त्रिपाठी)*

होली की भोली छीटें

उधर चुनावी जंग है, इधर होलिका रंग

चलने वाले हैं बहुत,
किन्तु रास्ता तंग।
उधर चुनावी जंग है,
इधर होलिका रंग।।

'आर्य लोक वार्ता' सजग,
रहता कैसे मूक।
बुरा न मानें आप भी,
अगर कहीं हो चूक।।

श्री रामनाथ कोविंद (राष्ट्रपति)
दंग अबीर गुलाल लख, बजते ढोल मृदंग।
वेंकैया अति शुभ्र पट, चढ़ा न दूजो रंग।।

श्री वेंकैया नायडू (उप राष्ट्रपति)
देवमण्डली मध्य ज्यों, जसुमति सुत गोविन्द।
शोभित राष्ट्राध्यक्ष त्यों, रामनाथ कोविन्द।।

श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी (प्रधान मंत्री)
खर दूषण पर राम ने, जैसे किया प्रहार।
मोदी जी त्यों कर रहे, खल-मण्डल संहार।।

श्रीमती सुमित्रा महाजन (अध्यक्ष, लोकसभा)
शक्तिरुपिणी ने लिया, पुनः नया अवतार।
सिद्ध सुमित्रा ने किया- नारी शक्ति अपार।।

श्री राजनाथ सिंह (गृह मंत्री)
राजनाथ जी कर रहे, घर की दशा सुधार।
रह न सकेगा हिन्द में, अब कोई गद्दार।।

श्री अरुण जेटली (वित्त मंत्री)
काले धन की केटली, रहे जेटली फोड़।
रोने धोने की मची, भ्रष्ट जनों में होड़।।

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदेश मंत्री)
सुषमा बढ़ी स्वराज की, छेड़ी ऐसी तान।
इस्लामिक कान्फ्रेंस से, भागा पाकिस्तान।।

श्रीमती स्मृति ईरानी (कपड़ा मंत्री)
रहकर वस्त्रोद्योग में, सीखा शर संधान।
दंग अमेठी देखकर, स्मृति तीखे बान।।

श्री गजेन्द्र गडकरी (परिवहन व लोक निर्माण मंत्री)
ज्यें ज्यों प्रतिपक्षी हुए, गठबंधन संयुक्त।
त्यों त्यों करते गडकरी, सड़कें गड्ढा मुक्त।।

श्री सत्यपाल सिंह (मानव संसाधन मंत्री)
सत्यपाल को ज्ञात है, वेद मार्ग की रीत।
दुर्ग अभेद्य अजीत का, तभी सके हैं जीत।।

श्री विपिन रावत (प्रधान सेनापति)
फहराता आकाश में, विजयी विश्व निशान।
सेनानायक हिन्द के, रावत विपिन महान।।

श्री राम नाइक (राज्यपाल, उ.प्र.)
चरैवेति के मंत्र से, रचा नया आयाम।
राज्यपाल सबसे सफल, निकले नाइक राम।।

योगी आदित्य नाथ (मुख्यमंत्री, उ.प्र.)
चले नापने राजपथ, अब दिल्ली की ओर।
यू.पी. की करके सफल, दृढ़ शासन की डोर।।

श्री हृदय नारायण दीक्षित (अध्यक्ष, विधान सभा)
संचालन विधि सभा की, पूर्णतया निष्काम।
दीक्षित जी की लेखनी, अप्रतिहत अविराम।।

डॉ. दिनेश शर्मा (उप मुख्यमंत्री)
क्षत विक्षत शिक्षार्थी, शिक्षक सब हैरान।
अकल खोलकर, बंद की, सकल नकल दूकान।।

श्रीमती सोनिया गाँधी
साथ सोनिया के लगे, नित्य नवीन प्रवाद।
पुत्र पुत्र ही रहा अब, पल्ले पड़ा दमाद।।

श्री राहुल गाँधी (कांग्रेस अध्यक्ष)
राहुल गाँधी का कथन, वोट न माँगो भीख।
जंग जीतने के लिए, आँख मारना सीख।।
आँख दबाकर मारिये, बैलेट ही फट जाय।
अगर सामने आ पड़े, ईवीएम कट जाय।।
व्यर्थ मिसाइल बम हुए, तोप तीर संगीन।
राहुल नजर कटार के, सम्मुख सब श्रीहीन।।

श्रीमती प्रियंका वाड्रा (कांग्रेस)
पतिरक्षा की कामना, हृदय बंधु का प्यार।
माता को दे सांत्वना, बहुत प्रियंका भार।।

सुश्री मायावती (बसपा)
माया सँग अखिलेश जी, शोभित विगत विषाद।
बुआ होलिका गोद में, जैसे हों प्रहलाद।।

श्री अखिलेश यादव (सपा)
पृथक् पिता से प्रथम हो, कियो चचा गमगीन।
साइकिल हाथी पर चढ़ी, यह सर्कस का सीन।।

श्री शिवपाल यादव
इधर अगर भ्राता खड़े, उधर उन्हीं का लाल।
साँप छछूँदर की दशा, झेल रहे शिवपाल।।

श्रीमती डिम्पल यादव
डिम्पल की सिम्प्लीसिटी, खींचे सबका ध्यान।
लड़े इलेक्शन कहीं से, मिले विजय फरमान।।

श्रीमती अनुप्रिया पटेल
अगर चूक हो गई तो, बिगड़ा सबका खेल।
रहती डाँवाडोल क्यों, यों अनुप्रिया पटेल।।

श्री दिग्विजय सिंह (पूर्व सी.एम.)
सेना से भी माँगते, जो बेशर्म सबूत।
ऐसे राजा से भले, सौ सौ बार कपूत।।
बना रहे जो धरा के, नंदनवन को नर्क।
हमदर्दी में उन्हीं की, कांग्रेस बेड़ा गर्क।।

श्री कमल नाथ (मु.मं., मध्य प्रदेश)
सी एम मध्य प्रदेश के, बने कमल के नाथ।
नाम सार्थक हो गया, मिला कमल का साथ।।

श्री अरविन्द केजरीवाल (मु.मं., दिल्ली)
सीधी चाल चलें नहीं, चलते उल्टी चाल।
बिन बवाल रहते नहीं, कभी केजरीवाल।।

श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया (कांग्रेस)
एक तरफ है मातृऋण, उधर बहन का ध्यान।
कठिन ज्योतिरादित्य का, राजनीति अभियान।।

श्री अजीत सिंह (रालोद)
बार बार दल बदलकर, दलदल दिया बनाय।
पायें जीत अजीत अब, केहि विधि कहा न जाय।।

महाशय धर्मपाल आर्य (एम.डी.एच.)
मिला पद्मभूषण सुखद, गाते गौरव गान।
लघुपत्रों की ओर भी, कभी गया क्या ध्यान?

श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान, दिल्ली सभा)
जब तक सजा प्रयाग में, महाकुंभ का साज।
आर्यकुंभ का प्रथम ही, किया सफल आगाज।।

श्री विनय आर्य (महामंत्री)
विनय धर्म के साथ यदि, क्यों हो व्यक्ति विपन्न।
स्वर्णाक्षर में है लिखा, 'सम्मेलन सम्पन्न'।।

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा)
शिक्षा शिव संकल्प से, श्री आनन्द कुमार।
मातृ पितृ देवर्षि ऋण, सर से रहे उतार।।

ठाकुर विक्रम सिंह (राष्ट्र निर्माण पार्टी)
ठाकुर विक्रम सिंह हैं, देश जाति की शान।
लघुपत्रों को भी दिया, सर्वप्रथम सम्मान।।

कायर कुटिल कपूत
गिरा मनोबल सैन्य का, जे मांगते सबूत।
ते जनमें कालिकाल में, कायर कुटिल कपूत।।

कांग्रेस
राहुल, सुरजे, दिग्विजय, सिद्धू, कपिल, थरूर।
चूर करैं कांग्रेस का, गौरव गर्व गुरूर।।

महागठबंधन
रहिमन ओछे नरन सों, सरै न एकौ काम।
मढ़ो दमामा जात किमि, सौ चूहे के चाम।।

भाजपा
राज अमित सुषमा अरुण, मोदी संग लखाय।
योगी के संयोग से, हृदय कमल विकसाय।।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, प्रिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में